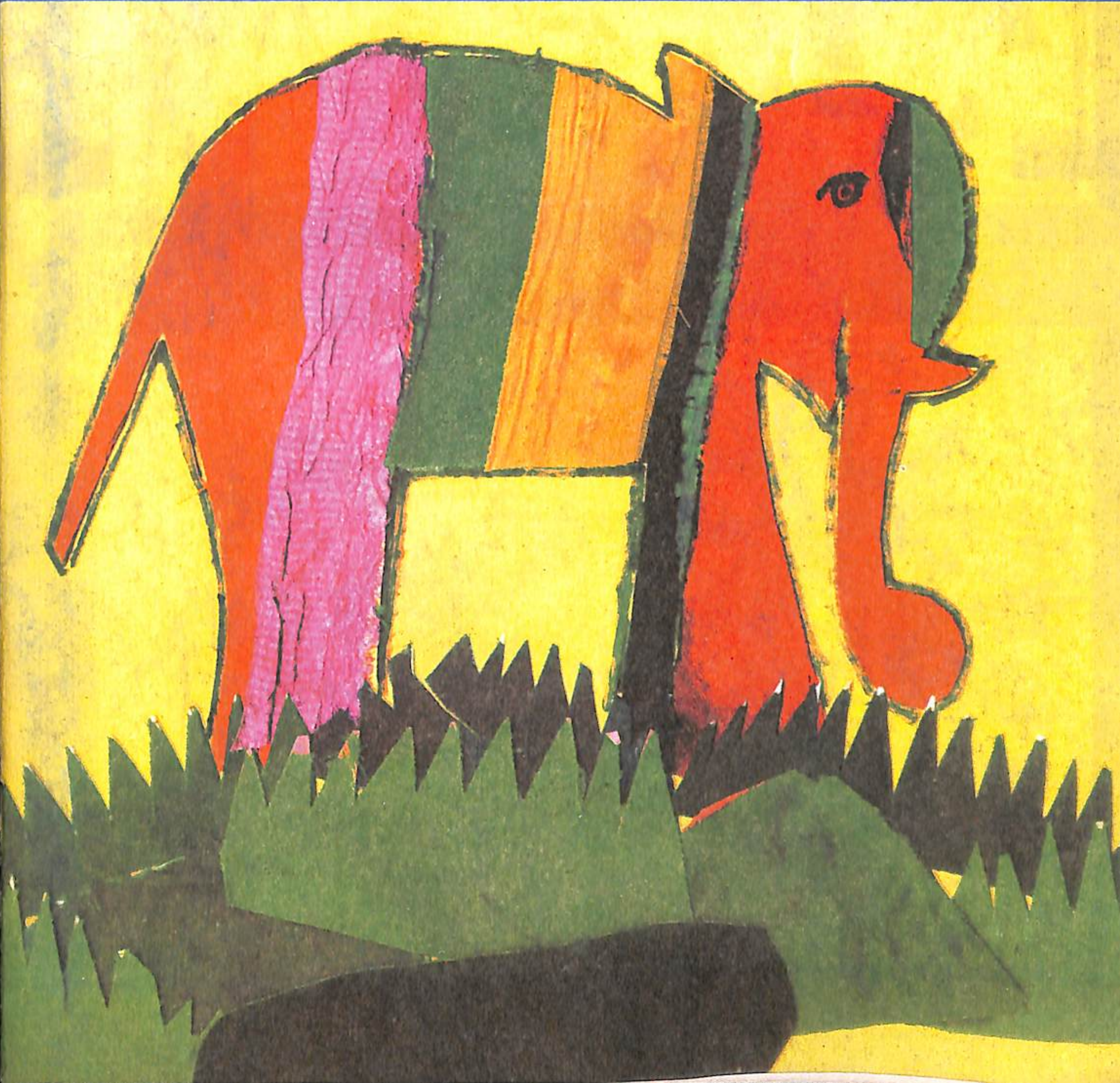
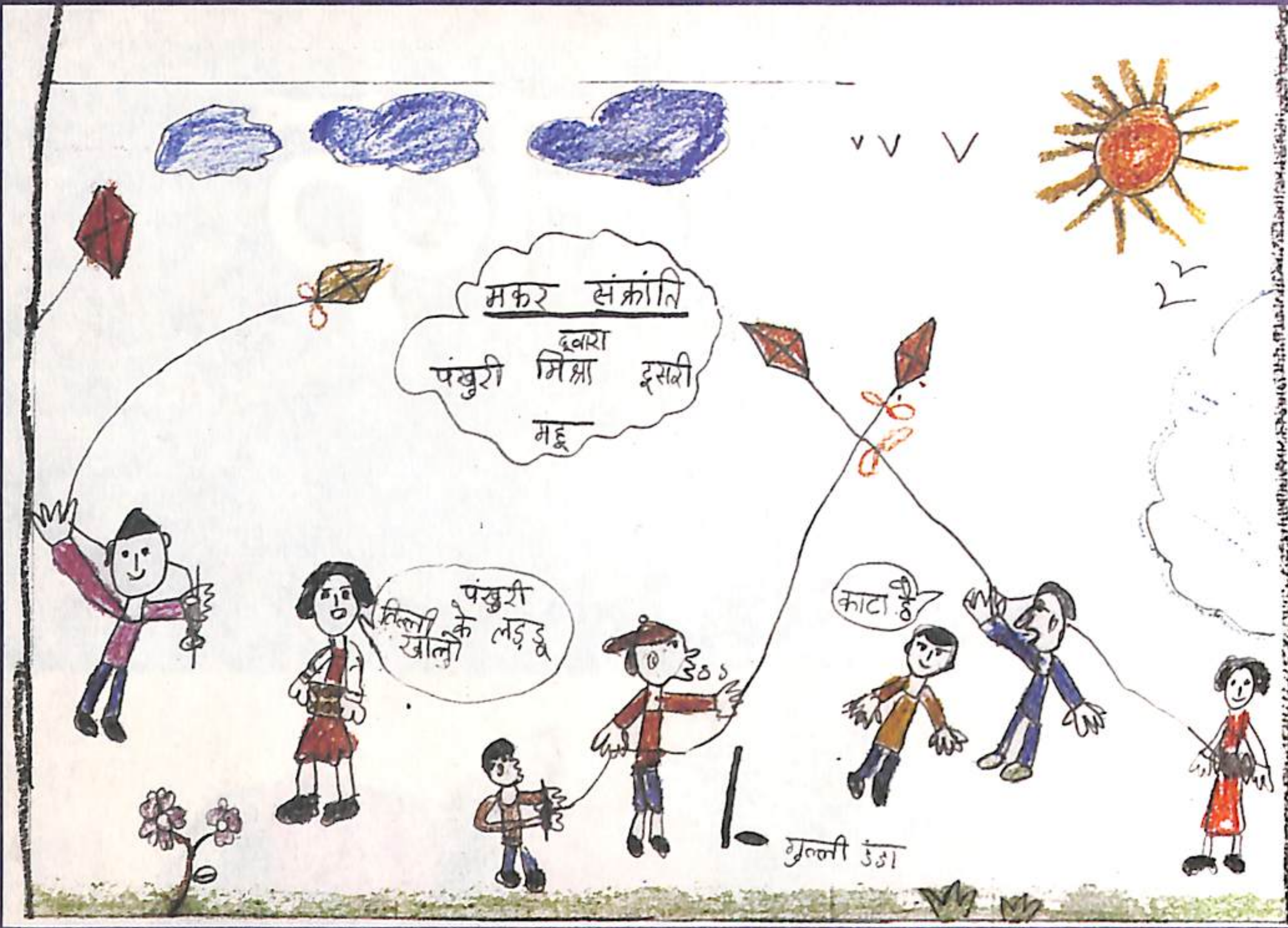
चकमक

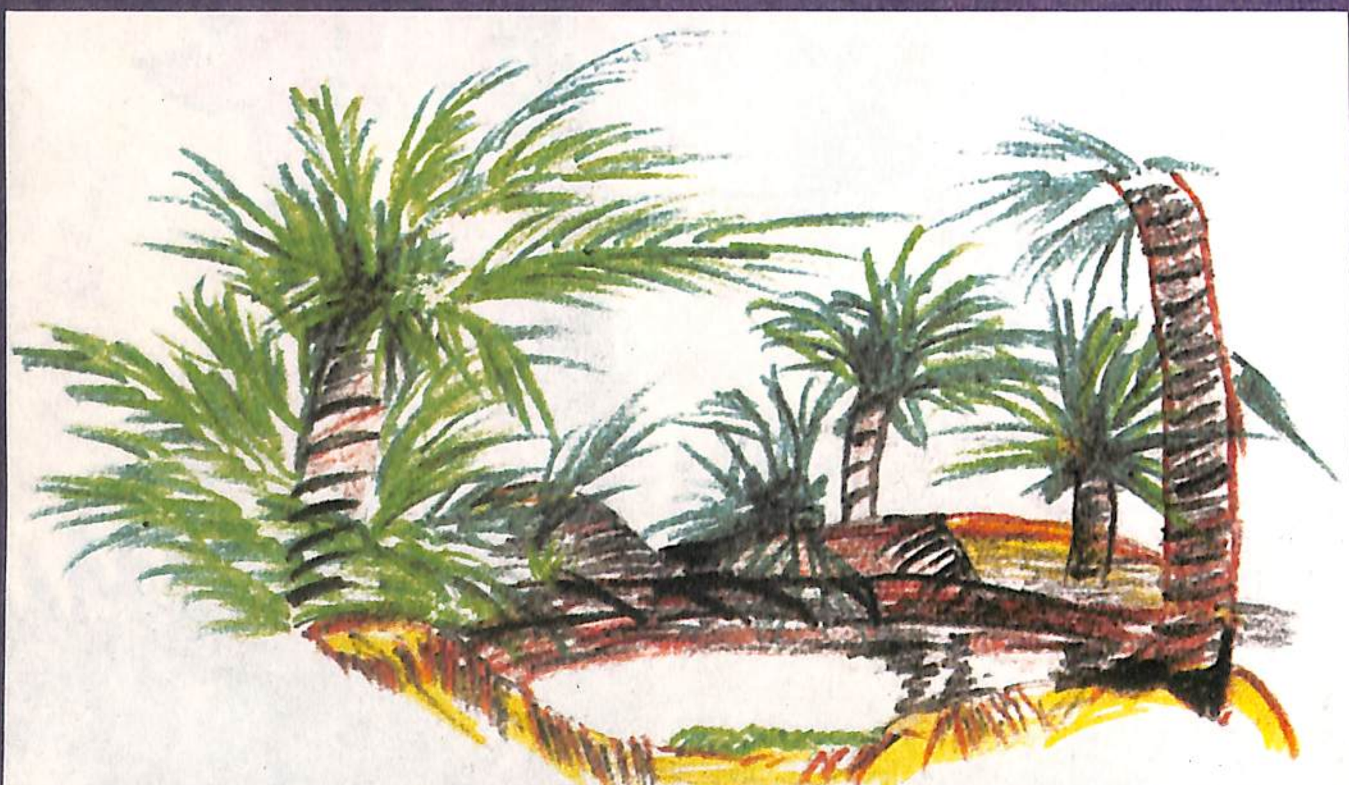
जनवरी 2006 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00

मेरा पन्ना विशेषांक



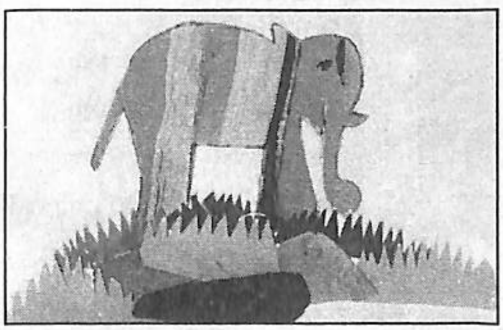


पंखुरी मिश्रा, दूसरी, महू, म.प्र.

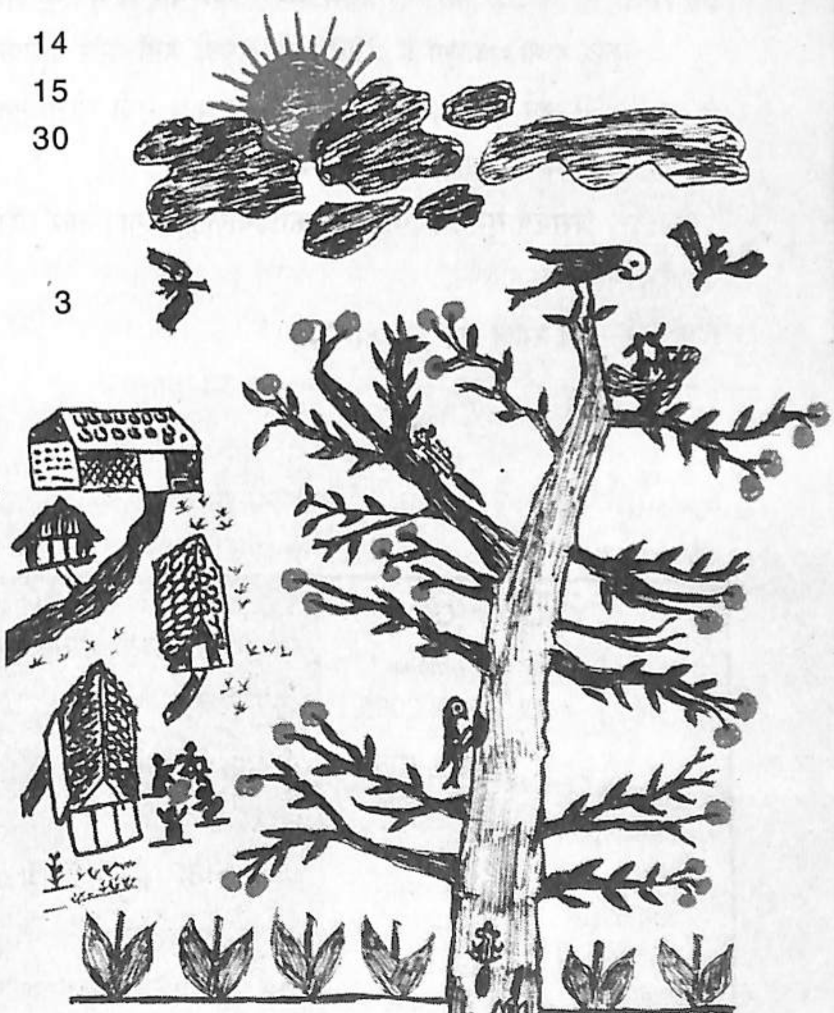


दाकपु रिदा, लिरोमोबा, अरुणाचल प्रदेश

क्या क्या है इस अंक में



आवरण - किरण मिमरोट, उज्जैन, म.प्र.
यह चित्र किरण ने कपड़े की चिंदियों से बनाया है।



विनोद प्रजापति, उज्जैन, म.प्र.

अपनी बात...

दोस्तो,

नये साल का पहला अंक 'मेरा पन्ना विशेषांक' के रूप में प्रस्तुत है। हमारे पास बहुत सारे बच्चों के चित्र और रचनाएँ आती हैं। दिक्कत यह होती है कि अनेक बच्चे चित्र या रचना के साथ अपना पता नहीं लिखते। चित्र के पीछे और रचना के नीचे अपना पूरा पता ज़रूर लिखना चाहिए। एक बात और ध्यान देने की है। हम ऐसे चित्र और रचनाएँ नहीं छापते जिन्हें इधर-उधर से नकल करके बनाया गया हो।

नया साल शुरू हो गया है। मैं जब छोटा था, साल के अन्तिम दिन हम कुछ दोस्त साथ मिल बैठते थे और एक-दूसरे को बताते थे कि हमने इस साल क्या-क्या खास किया। हमारी कोशिश होती थी कि साल में कम से कम एक नया काम ज़रूर सीखें, एक नयी जगह ज़रूर देखें और एक नया दोस्त ज़रूर बनाएँ।

2005 में कश्मीर में भूकम्प जैसी दुखद घटनाएँ हुई, लेकिन अच्छा भी बहुत कुछ हुआ। आशा है 2006 में अच्छी बातें और ज़्यादा होंगी।

अगले महीने से **चकमक** में हम कुछ नयी चीज़ें शुरू करने जा रहे हैं। फटाफट लिखो कि तुम **चकमक** में और क्या-क्या देखना चाहोगे?

बस तो तुम्हारी चिट्ठियों का इन्तज़ार रहेगा। और बेशक हर चिट्ठी लिखने वाले को जवाब ज़रूर मिलेगा।

नये साल की शुभकामनाएँ!

तुम्हारा
स्वयं प्रकाश

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 21, अंक-6, जनवरी 2006

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
स्वयं प्रकाश
सुशील शुक्ल
संगीता गुंदेचा

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सज्जा
राकेश खत्री

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com
कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



चकमक से मिले नाटक, गीत...

चकमक के सुन्दर, उपयोगी प्रकाशन के लिए मनपूर्वक बधाई! हिन्दी दिन (14 सितंबर) के अवसर पर चकमक पत्रिका के कारण मुझे वाहवाही मिली। साथ ही चकमक ने मेरा तनाव भी कम किया। धन्यवाद!

दरअसल बात यह हुई कि मैं पाठशाला में कक्षा 6 से 10वीं तक हिन्दी विषय पढ़ाती हूँ। हर साल की तरह इस साल भी हिन्दी दिन मनाने का निश्चित हुआ। मैंने हमेशा की तरह चकमक के गट्ठों के पास दौड़ लगाई। और 7-8 साल पुरानी चकमक से मुझे कविता और नाटक 'गणित देश' मिला जो भोपाल में मैंने अपने भतीजे और अन्य को लेकर कराया था। उस दिन जब मुझे वही नाटक वैसा-का-वैसा मिला तो मैं फूली न समाई और बच्चों को आवाज़ लगाई कि अब इधर-उधर ना ढूँढो। प्रैक्टिस के लिए तैयार रहो। दूसरे ही दिन से प्रेक्टिस शुरू की। देखते ही देखते अच्छा करने लगे। साथ ही अगस्त 05 में छपी कविता 'ये बात समझ में आई नहीं' भी बहुत अच्छे से बच्चों ने प्रस्तुत की। सुनने वालों को बार-बार सुनने की इच्छा हुई। इस तरह दो दिन बाद 14 सितंबर आया। नाटक, कविताएँ और चकमक की पहेलियों आदि को ले कार्यक्रम अच्छा हुआ। एक बार फिर से शुक्रिया।

आशा है इसी तरह बीच-बीच में हिन्दी नाटक, पहेलियों को भी स्थान देकर मराठी भाषिक राज्य में रहने वालों को मार्गदर्शन देकर प्रोत्साहित करते रहेंगे।

चकमक और चकमक की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई!

- शुभांगी तानाजी तावरे, फलटण, सतारा (महाराष्ट्र)

चकमक से कीर्ति और कला

मैं आज एम.ए. पूर्वार्द्ध की छात्रा हूँ। स्वभाविक रूप से मेरी रुचि कला में रही है। मेरे पिताजी श्री उमेश चंद्र चौहान वैसे तो विज्ञान के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं, पर अन्य कलाओं में भी उनकी रुचि रही है। बस मैंने भी उन्हीं के उपकरणों को अपने हाथों में थाम लिया। मैं तीन वर्ष की उम्र से ही चित्रों को बनाने व उनकी कल्पना करने लगी।

मेरा अनुभव है कि किसी भी कला में निखार व नवीनता लाने के लिए प्रेरणा व कीर्ति आवश्यक है। ऐसा ही सहयोग मुझे एकलव्य संस्था की 'चकमक' पत्रिका से मिला। मैं इस पत्रिका में अपने चित्र व कविता को देखकर बहुत खुश होती व सबको पत्रिका बताती। सभी मुझे और चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करते।

इन्हीं प्रेरणाओं के कारण मैंने महाविद्यालय में लगातार तीन वर्षों तक काव्य रचना में अपना स्थान बनाए रखा व रंगोली, पेंटिग में अपनी विशेष पहचान बनाई।

सबसे अधिक खुशी मुझे तब हुई जब मैंने रंगोली प्रतियोगिता में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में 2001 में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं नेशनल ज़ोन के लिए परभणी (महाराष्ट्र) में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

मैं आज भी चकमक पढ़ती हूँ और प्रेरणा लेती हूँ।

कीर्ति चौहान, टिमरनी, म.प्र.

चकमक का बदलता स्वरूप आकर्षक है। आशा है इसे आप लोग जारी रखेंगे और कुछ नए विषयों से भी पाठकों को परिचित कराएँगे। जैसे टुलटुल विश्वास ने सुडोकू से और डॉ. सुशील जोशी ने इंटरनेट से कराया।

- श्याम सुशील, दिल्ली

चकमक निश्चय ही अपनी चमक में अद्‌भुत है। बच्चों के साथ-साथ इसमें हम सभी के लिए व्यापक पठनीयता मौजूद है।

- से.रा.यात्री, गाज़ियाबाद

मुझे मेरा पन्ना की रचनाएँ बहुत पसन्द आती हैं। उनमें बाल मन छलकता है।

- गोपीचन्द श्रीनागर, झाँसी

चकमक पढ़कर मैं भी अपने बचपन में दौड़ जाती हूँ। क्योंकि इसमें वर्णित सारा परिवेश कहानी-कविताओं में, इसकी भाषा में - मेरे अपने क्षेत्र हरदा और इन्दौर का होता है। हरदा मेरा जन्म स्थान है, इन्दौर कर्मभूमि रही है और ससुराल अम्बाला में है। चकमक में बच्चों की तोतली ज़बान से निकली हुई रचनाएँ, कविता, कहानी, चित्र सब बहुत आकर्षित करते हैं। इस सुन्दर पत्रिका का स्तर बनाए रखने के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

- उर्मि व्यास, अम्बाला छावनी

बच्चों की अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता को मंच प्रदान करने के मामले में चकमक का प्रदेय बेजोड़ है। बच्चों की रुचि और कल्पनाशीलता को दिशा, प्रोत्साहन और गति देने में माथापच्ची, चित्र पहेली, अपनी प्रयोगशाला जैसे स्तंभ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- चित्रेश, सुल्तानपुर, उ.प्र.

चकमक का नया अंक। दीपावली और ईद पर लेख देकर आपने अच्छा किया है। विशेषकर ईद पर। ईद क्यों व कब और कैसे मनाई जाती है मुझे भी साफ-साफ नहीं पता था। कुछ-कुछ भारी-सा नहीं हो रहा यह अंक? बच्चों की रचनाओं का कच्चापन (कवर पर, चारों पृष्ठों पर) चकमक की खास पहचान है।

- प्रेमपाल शर्मा, दिल्ली

लोकबाबू की डींग पसन्द आई। आगे क्या हुआ जानने को उत्सुक हूँ। 'ये बात समझ में आई नहीं' वाकई दिलचस्प कविता है। इस बार की बात शीर्षक वाला सम्पादकीय भी खूब जानकारी भरा है। धन्यवाद।

- देवकी नन्दन , मुम्बई

चकमक मे लापोड़िया गाँव पर सामग्री देख अच्छा लगा। इतनी सारी चीज़ों में से आप लोगों ने बच्चों की रुचि की बातें छन्नी लगाकर छाँट लीं, बड़ी बात है।

- अनुपम मिश्र, नई दिल्ली

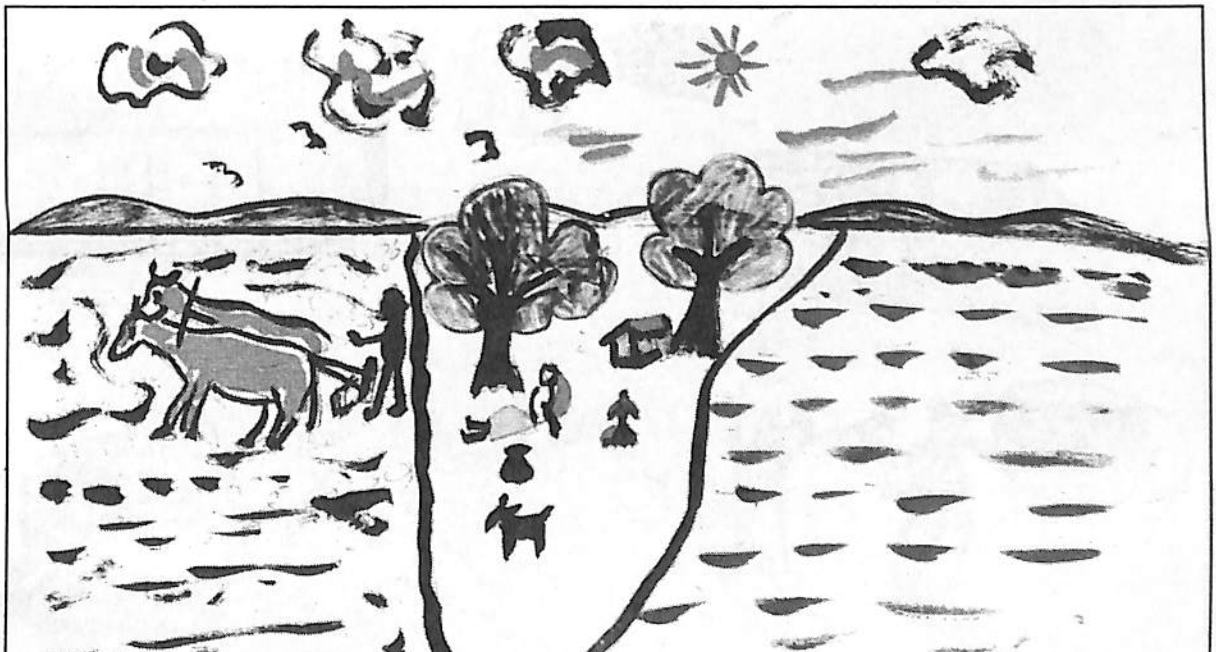
आर्यन मेरा चचेरा भाई है। वह पहली में पढ़ता है। अब वह भी चकमक का मेंबर बनेगा। अगली बार वह खुद ड्रॉइंग बनाकर भेजेगा। मैंने स्कूल में टीचर्स डे पर 'ये बात समझ आई नहीं' कविता बोली थी। सबने खूब तालियाँ बजाई। आप मेरा पता सही छापना। 19 तारीख से मेरी परीक्षा है। आपने मेरे नाम चिट्ठी भेजी। बहुत अच्छा लगा।

- पँखुरी मिश्र, महू, म.प्र.

वर्षा तुमको आना है

वर्षा तुमको आना है,
खूब जल बरसाना है।
नदी-नाले, ताल-तलैया,
लबा-लब कर जाना है।
हरी -भरी धरती करना है,
नभ में धनुष सजाना है।
ध्यान रहे बिजली चमके,
नीचे नहीं गिराना है।
हम सब रोकें, इतना पानी
संकट न गहराना है।
पेड़-पौधे खूब लगाएँ
वृक्ष न कोई काटना है।
वर्षा तुमको आना है
खूब जल बरसाना है।

- चिराग कोठारी, नवमीं, तनोड़िया, शाजापुर, म.प्र.



(नाम, पता नहीं लिखा)

बस

बस है ऐसी अपनी निराली,
मोटे-मोटे पहियों वाली।

सड़क पर दौड़े, धुँआ निकाले,
सबको अपने में समा ले।
जैसे ही लाल सिगनल मिलता,
रुक जाती वो ब्रेक लगाकर।

पीला सिगनल देखकर हो जाती वो स्टार्ट,
हरे सिगनल पर चले वो होके घोड़े पे सवार।
आगे-पीछे ऊपर-नीचे चारों तरफ देखे वो,
पों-पों की आवाज़ से, करदे सबको पीछे वो।

बस है ऐसी अपनी निराली,
मोटे-मोटे पहियों वाली।

- आशा गुप्ता, सातवीं, नांगलामांची, दिल्ली



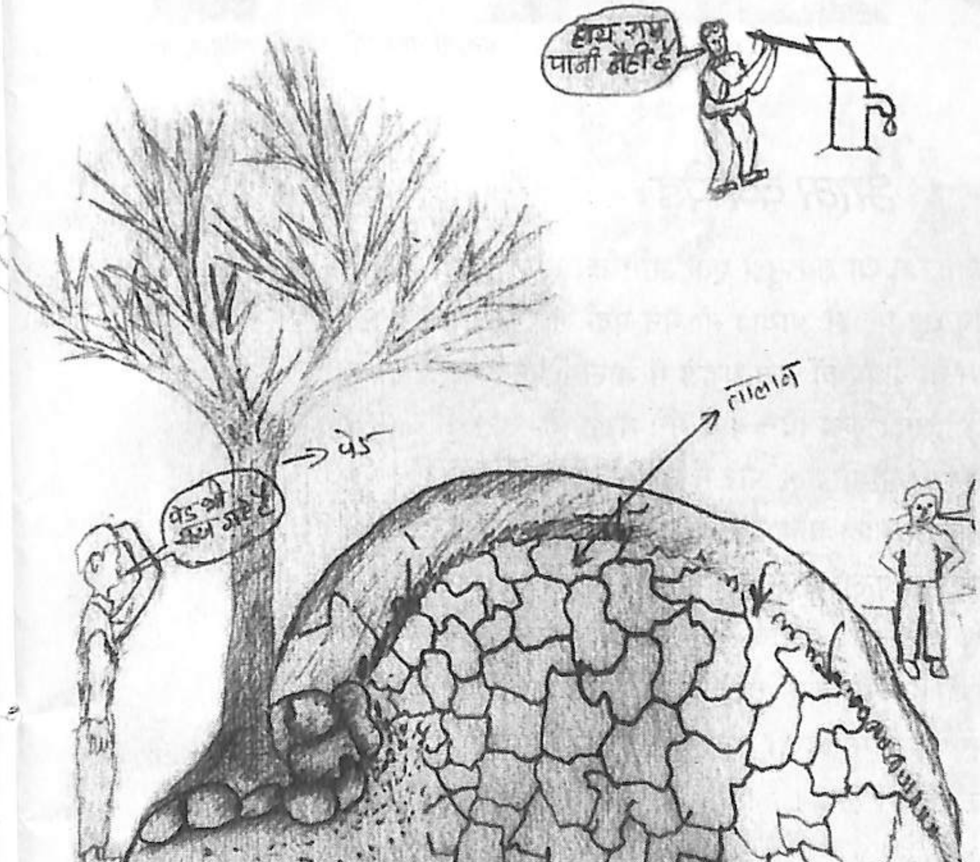
- आदित्य राज चौहान, आठवीं, उज्जैन, म.प्र.

मेरी दोस्त

दोस्त! दोस्त को हम सब कुछ बता सकते हैं। उससे लड़ सकते हैं, उसके साथ खेल सकते हैं, उससे मज़ाक कर सकते हैं। दोस्त हो तो जीवन में सब कुछ होता है वरना खालीपन रहता है। मेरा दोस्त संजीव मेरे घर से काफी दूर रहता है। इसीलिए मैं उसके साथ स्कूल से आने के बाद खेल नहीं पाता। मेरे घर में कोई और नहीं होता तो मैं बोर हो जाता हूँ।

अपना समय मैं कैसे बिताऊँ इसके लिए मैंने अपने घर की दीवार को अपना दोस्त बना लिया। मैं उसके साथ बात करता हूँ। उसके साथ खेलता हूँ। उसके ऊपर तकिया या बॉल मारकर खेलता हूँ। जब कभी दुःखी होता हूँ तो उसी को पकड़कर रो लेता हूँ। उसके साथ मिलकर नई-नई कहानियाँ बनाता हूँ। मुझे लगता है कि दीवार मेरी ऐसी दोस्त है जो मेरी बात बड़े ध्यान से सुनती है। मुझे अपने इस कोने की दीवार से बहुत प्यार है।

- राजन, 12 साल, अंकुर, नांगलामाची किताबघर, दिल्ली





- इनाक्षी वाजपेयी, पहली, भोपाल, म.प्र.

आम का पेड़

एक बार जब मैं जा रहा था तब मुझे एक आम का बीज मिला तो मैंने उसे उठा लिया और घर पर ले आया। तो मैंने एक डंडे से एक खड्डा किया और उस आम के बीज को उस गड्डे में डाल दिया और ऊपर से मिट्टी डाली। पानी दिया। कुछ दिन बाद मैंने देखा कि उस बीज में से एक डण्डी और कुछ पत्ते भी निकले और मैं उसे रोज़ पानी देता और वह बढ़ता-बढ़ता गया। कुछ साल बाद वह बहुत बड़ा हो गया और उसमें फल आ गए। तो मैंने उन फलों में से एक फल तोड़ा और खाया तो आम तो बहुत रसीला और मीठा था। मैं रोज एक-एक फल खा लेता और फिर मैंने एक बगीचा बनाया। उसमें तरह-तरह के फूल पेड़ लगाए और उसमें मैंने आम के तो आठ पेड़ लगा दिये। उन आम के पेड़ों में फल आ गये। और मैं उन फलों को बेचने लगा।

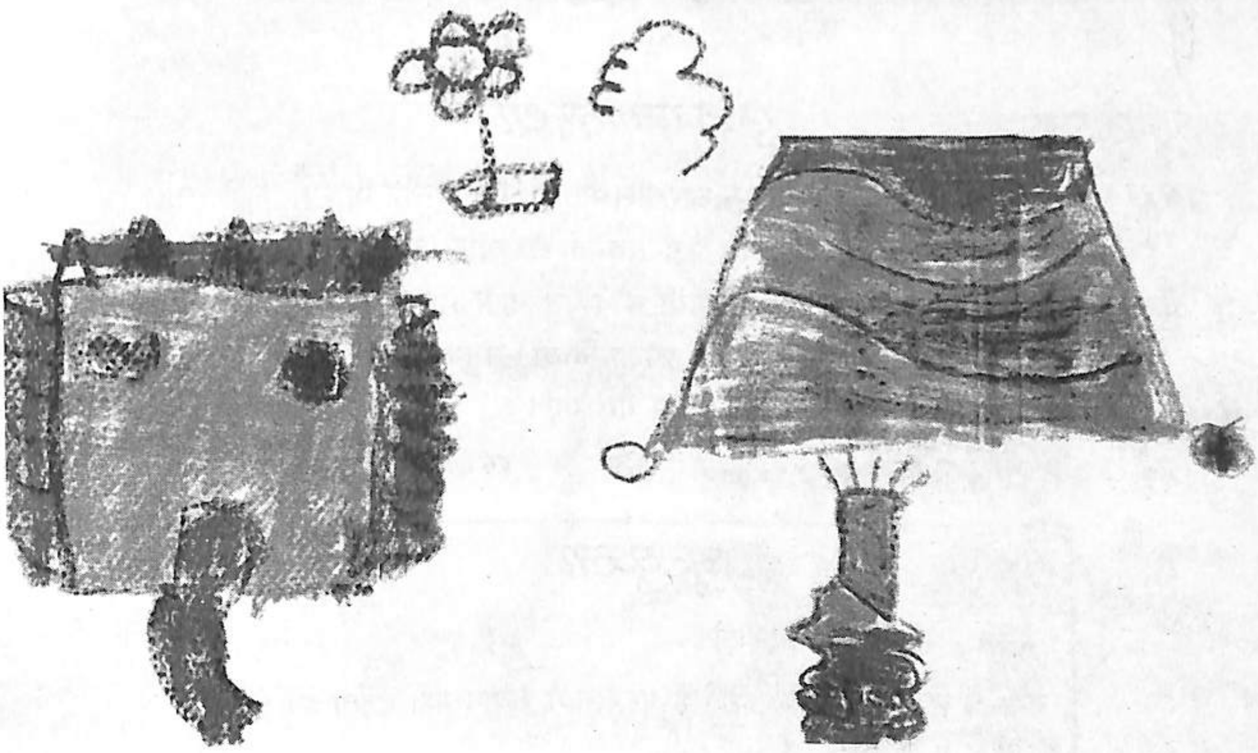
- शुभम परमार, छठी, उज्जैन, म. प्र.

सफाई

बरसात में मेरे घर के आँगन में बहुत सारी घास उग गई थी। बरसात के कारण घर की छत से कवेलू आँगन में गिर गए।

उससे आँगन में बहुत कचरा दिखता था। मैं आँगन में खेल नहीं पाता था। कवेलू मेरे पैर में चुभते थे। फिर मम्मी ने कहा कि रविवार को आँगन साफ करेंगे। रविवार को मेरी छुट्टी और मम्मी की भी छुट्टी रहती है। इसलिए रविवार को हम दोनों घर पर थे। पर पापा आफिस के काम से भोपाल गए थे। रविवार को सुबह मम्मी ने नाश्ता बनाया। हम दोनों ने नाश्ता खाया। इसके बाद आँगन साफ किया। मैंने कवेलू फेंके मम्मी ने घास उखाड़ी। फिर मैंने आँगन की झाड़ू लगाई। फिर में खेलने लगा। मुझे आँगन अच्छा लग रहा था।

- समर्थ परमार, दूसरी, देवास, म.प्र.



- गगन, भोपाल, म.प्र.



- गौरव दभादे, आठवीं, उज्जैन, म.प्र.

एक जंगल था

एक जंगल था। उस जंगल में खरगोश भी था, एक बन्दर भी था, हाथी था। उन सब का राजा शेर था। वह उन सब की देखभाल करता था। कुछ लोग जब हाथी को ले जा रहे थे तो हाथी ने दहाड़ मारी। उस दहाड़ को सुनकर शेर आया। और शेर ने मनुष्य पर हमला किया। मनुष्य ने शेर को गोली मार दी। सभी जानवर उसके पास आकर बैठ गए।

- प्रेम सिंह, मलारगढ़, मंदसौर, म.प्र.

चुटकुला

कर्नल - नौजवान आगे बढ़ो।

तब नौ जवान आगे बढ़ जाते हैं पर दसवाँ जवान नहीं बढ़ता है।

कर्नल - क्यों तुम क्यों नहीं बढ़े?

जवान - सर आपने केवल नौ जवानों से कहा था।

पवन मालवीय, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

मेरी कक्षा

एक बार हम अपनी कक्षा को ध्यान से देखकर सोच रहे थे कि यह कितनी गन्दी हो चुकी है। हम सोच रहे थे बाई तो झाड़ू लगाएगी ही नहीं। तो फिर हम नीचे से झाड़ू ले आए और मेरी दोस्त पूजा झाड़ू निकाल रही थी और बोल रही थी कि अब अपन रोज झाड़ू लगाएँगे। इतने में हमारे प्रिंसीपल आ गए। हमारी हाथ की झाड़ू वैसे की वैसे छूट गई। और फिर बाद में सर भी हमको देखकर हँस रहे थे। और हम भी उनके जाने के बाद अपने कारनामे को सोचकर हँस रहे थे।

- कृतिका धूत, नवमीं, उज्जैन, म.प्र.



- ईश्वरलाल परमार, नौगाँव, रतलाम, म.प्र.

ये सुनामी की लहरें

ये सुनामी की लहरों ने ली कितनों की जान
पर कुछ न कर पाई सरकार
माँग की पीड़ितों ने वापिस
लौटाओ मेरी पहचान
फिर किया कुछ
सरकार ने दिया खान-पान
तब कुछ कम हुई हलचल
फिर खोज की तो पता चला
कि मरे 1500000 से ज़्यादा
कुछ बच्चों को पता नहीं कि उनके माता-पिता कहाँ?
कुछ बच्चों को पता नहीं कि उनका घर कहाँ?

- आदित्य वेद, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.



- अभिजीत, छह साल, (पता नहीं लिखा)

माथा पच्ची

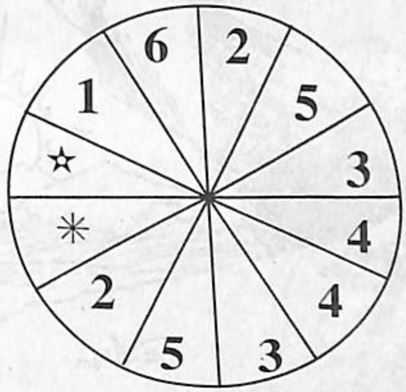


अगर 86 बराबर हों 98 के तो 73 किसके बराबर होंगे?

XI + I = X

तुम्हें इस समीकरण को सही करना है। इसे सही करने के कई तरीके हो सकते हैं। जैसे ग्यारह की एक तीली उठाकर उसी के बाईं ओर रख दो। नया समीकरण IX + I = X सही समीकरण होगा।

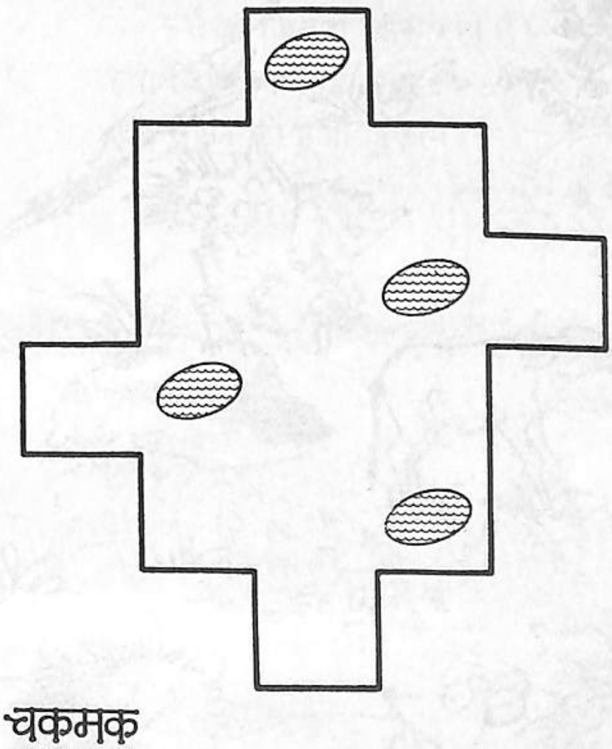
पर क्या तुम कोई ऐसा कोई तरीका सुझा सकते हो जिससे तीलियों की उठापटक किए बगैर समीकरण सही हो जाए?



इस गोले में भरे अंकों के आधार पर ज़रा गुणा भाग करके बताओ कि ☆ और ✳ की जगह कौन-सा अंक आएगा?

यह एक किसान के खेत का नक्शा है। इसमें चार तालाब हैं। किसान को यह खेत चार बराबर हिस्सों में बाँटना है। हाँ, पर इस बात का ध्यान रखना है कि हर हिस्से में एक तालाब रहे।

क्या तुम किसान की मदद कर सकते हो?



बाल भवन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कविता कार्यशाला में कई बच्चों द्वारा मिलकर लिखी गयी दो कविताएँ

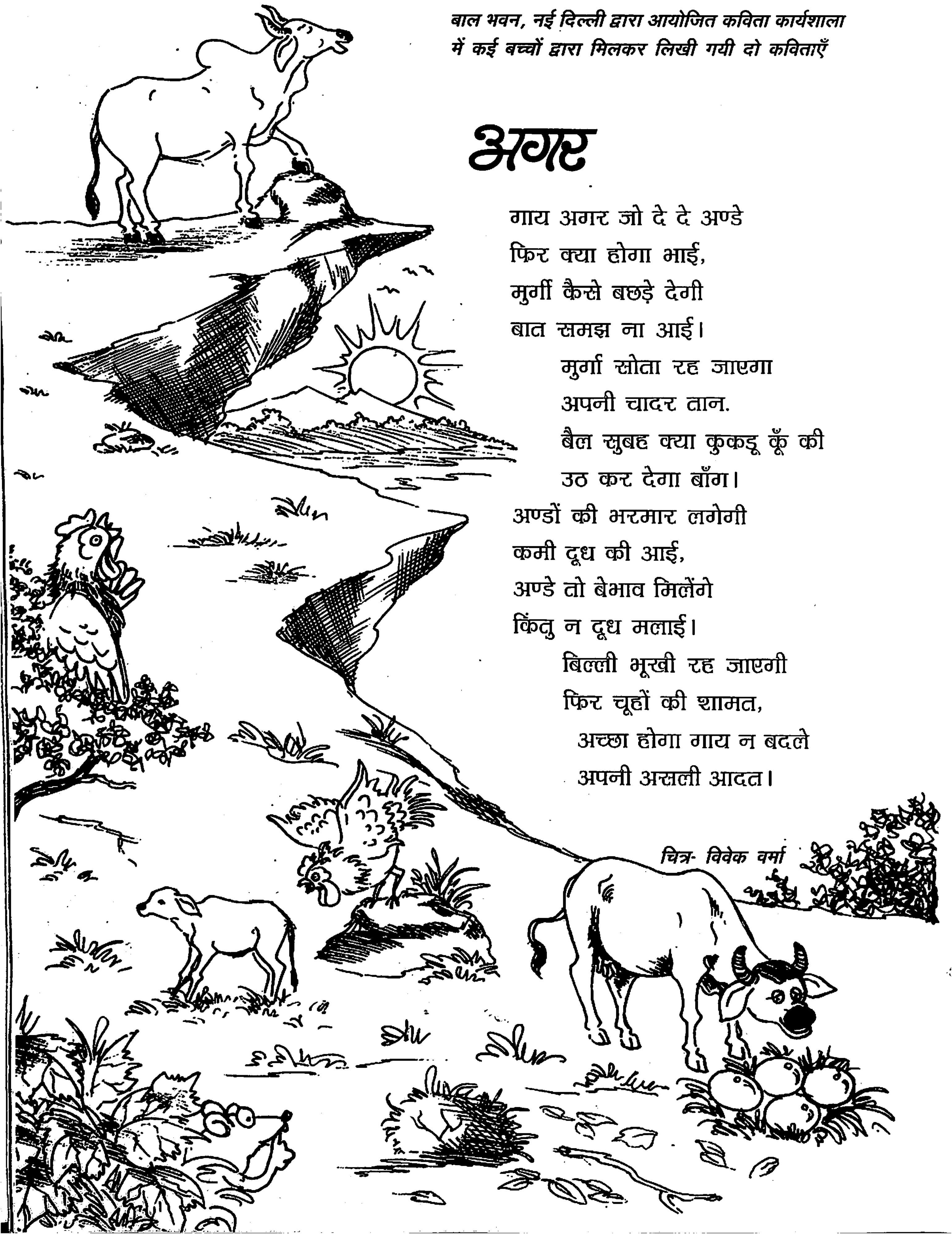
अगर

गाय अगर जो दे दे अण्डे
फिर क्या होगा भाई,
मुर्गी कैसे बछड़े देगी
बात समझ ना आई।

मुर्गा सोता रह जाएगा
अपनी चादर तान.
बैल सुबह क्या कुकडू कूँ की
उठ कर देगा बाँग।

अण्डों की भरमार लगेगी
कमी दूध की आई,
अण्डे तो बेभाव मिलेंगे
किंतु न दूध मलाई।

बिल्ली भूखी रह जाएगी
फिर चूहों की शामत,
अच्छा होगा गाय न बदले
अपनी असली आदत।



चित्र- विवेक वर्मा





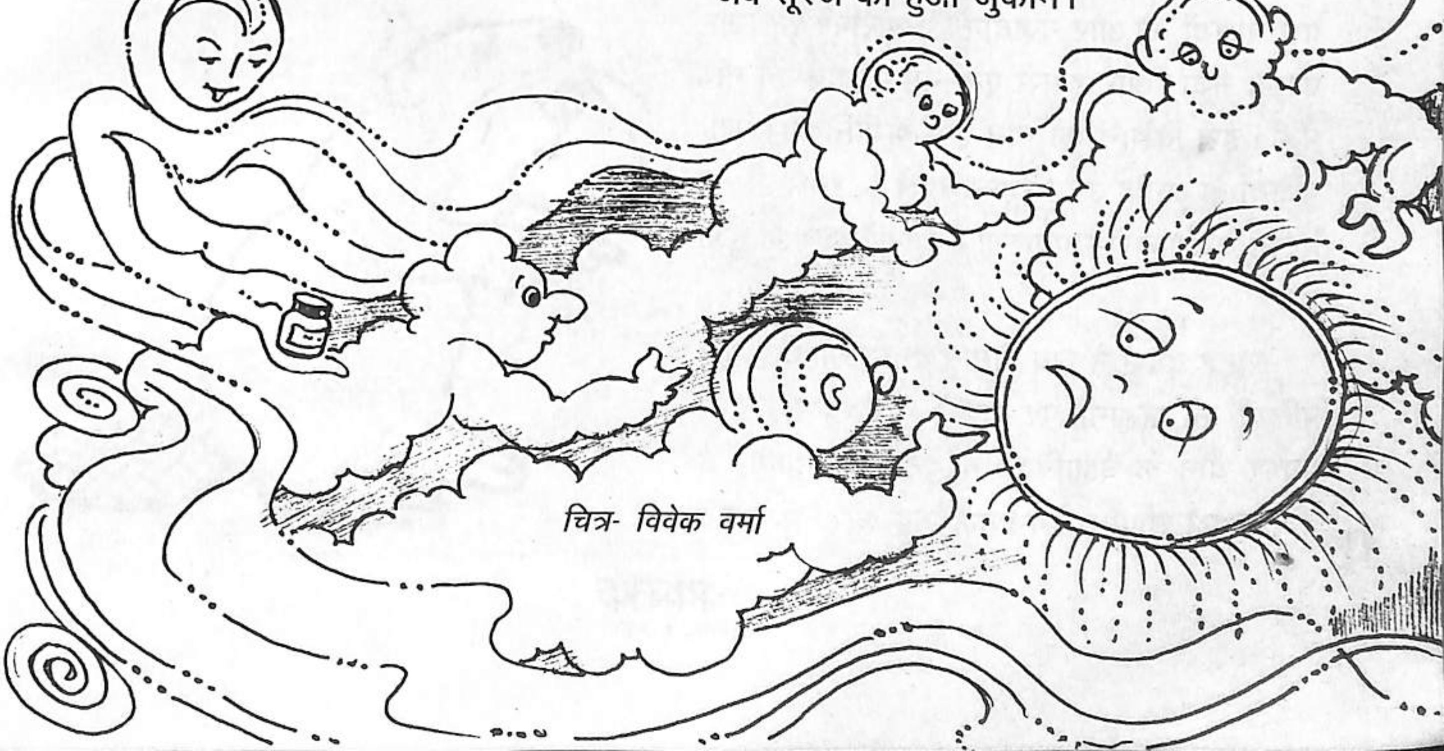
जब सूरज को हुआ ज़ुकाम

जब सूरज को हुआ ज़ुकाम
लेट गया वो चादर तान।
भूल गया वो सुबह निकलना,
फूलों ने भी छोड़ा खिलना।
किरणें भूलीं आज मचलना,
चिड़ियाँ भूलीं सुबह चहकना।

मुर्गा भुला देना बाँग,
जब सूरज को हुआ ज़ुकाम।
अम्बर ने मीटिंग बुलवाई,
कहाँ छुपे हो सूरज भाई?
बादल की तब छोड़ रज़ाई,
बोला सूरज ले अँगड़ाई।
आँछी-आँछी क्या है काम?
जब सूरज को हुआ ज़ुकाम।

सर्दी से मैं काँप रहा हूँ,
कोहरे से मैं झाँक रहा हूँ।
छीक-छीक कर हाल बुरा है,
देखो कितना खाँस रहा हूँ।

हवा लिए तब आई बाम,
जब सूरज को हुआ ज़ुकाम।



चित्र- विवेक वर्मा

पशु-पक्षियों से सीखते वैज्ञानिक

- डॉ. देवकी नंदन

कभी तुमने इस बात पर गौर किया है कि कोई चीज़, वह चाहे कोई कला हो, संगीत हो या नृत्य हो, कोई रस्म हो या रिवाज़ हो, कैसे शुरू हुई होगी?

जैसे अब कराटे को ही ले लो। ज़रा अंदाज़ा लगाओ यह कला इंसान ने कहाँ से सीखी होगी? लोग कहते हैं कि कराटे की कला जापान के ओकीनावा शहर से दुनिया भर में फैली। यह बात ज़्यादा पुरानी नहीं बल्कि 1920 के आसपास की मानी जाती है। कुछ लोग कहते हैं जापान ने बिना हथियार की यह युद्ध-कला चीन से सीखी, और चीन ने यह भारत से सीखी। मगर खाली हाथ की यह बेजोड़ कला इंसान ने आखिर किनसे सीखी?

कहते हैं कराटे को हमने पशु-पक्षियों से सीखा है। पशु-पक्षी हमला और बचाव करते समय तरह-तरह की कलाबाज़ियाँ और पैंतरेबाज़ियाँ दिखाते हैं। कई साल पक्षियों के इन करतबों को देखकर हमने कराटे की कला जानी।

इंसान की उत्सुकता पशु-पक्षियों में और बढ़ी। पशु-पक्षियों को और नज़दीकी व बारीकी से देखा-परखा गया। और इससे एक नए विज्ञान की नींव पड़ी। इस विज्ञान का नाम है - बायोनिक्स। पशु-पक्षियों के अनेक अन्य रहस्य खुले हैं, साथ ही नए किस्म के औज़ारों-उपकरणों का आविष्कार भी हुआ है।

राइट ब्रदर्स ने जब विमान बनाया तो कई-कई पक्षियों की उड़ानों पर घण्टों गौर किया। इसी प्रकार चीन के वैज्ञानिकों ने देखा कि भूकम्प से ठीक पहले साँपों व रेंगनेवाले कई कीड़ों में बेचैनी व भगदड़ मच जाती है। कई देशों के वैज्ञानिकों ने महसूस किया कि कुछ खास किस्म की मछलियाँ तूफान आने से पहले अजीब हरकतें करने लगती हैं। बायोनिक्स विज्ञान ने इन्हीं खासियतों का अध्ययन किया है और बहुमूल्य जानकारी जुटाई है। कुत्तों में सूँघने की विशेष शक्ति का राज क्या है? अब बायोनिक्स की पढ़ाई करने वाले सूँघने की इस शक्ति पर काम कर रहे हैं ताकि इसके ज़रिए कुछ ऐसे उपकरण बना पाएँ जो हवाई अड्डों पर ग़ैर-कानूनी ड्रग्स लाने ले-जाने वालों को तुरंत पहचान लें।

तुमने बीवर पशु का नाम सुना है? इसे पानी का इंजीनियर कहा जाता है। यह अपने पैने दाँतों से पेड़ की डालों को मिनिटों में काट देता है। और इन्हें नदी में ले जाकर अपने लिए आरामदायक घर बनाता है। सोवियत इंजीनियर इग्नातेव ने इसके दाँतों का अध्ययन किया और एक धातु कटर बनाया। यह आज लेथ मशीनों में इस्तेमाल हो रहा है। इसका तो नाम ही 'बीवर कटर' हो गया है।



जापान के एक वैज्ञानिक प्रोफेसर ताकियो ने बरसों पहले बताया था कि हम अगर पानी के जहाज़ को व्हेल मछली जैसा बनाएँ तो इसे चलाने में कम ईंधन खर्च होगा। प्रयोगों से पता चला कि वाकई इस सुझाव से 25 प्रतिशत ईंधन की बचत होती है। बाद के प्रयोगों से यह पता चला कि अगर जहाज़ डॉल्फिन की शक्ल जैसा बनाएँ तो वह शायद और भी तेज़ चले। मगर इस प्रयोग का कोई भी फायदा नहीं हुआ। जानते हैं क्यों?



दरअसल डाल्फिन के पानी में तैरने की रफ्तार में उसकी त्वचा व उसके डीलडौल की अहम भूमिका होती है। इसी त्वचा के बल पर डॉल्फिन की रफ्तार में गज़ब की तेज़ी पैदा होती है। यह त्वचा कोमल और चिकनी होती है। इससे पानी का घर्षण कम होता है जिससे उसका तैरना कुछ आसान हो जाता है। इन्हीं सब वजहों से डॉल्फिन तेज़ जहाज़ को भी पीछे छोड़ देती है। अनुसंधानों के आधार पर जर्मन इंजीनियर गुस्ताव क्रेमर ने सन् 1958 में डॉल्फिन जैसी त्वचा प्रयोगशाला में बनाई। देखा गया कि इस त्वचा से ढँकी-मँढी नावें पानी में खूब तेज़ चलीं।



वैज्ञानिकों ने देखा-परखा है कि घास वाला टिड्डा भूकम्प का पहले ही पता लगा लेता है। कारण यह है कि इसके सुनने की शक्ति बहुत ज़्यादा होती है। आज वैज्ञानिक पेंग्विन का अध्ययन कर रहे हैं ताकि बर्फ पर तेज़ी से चलने वाली गाड़ी बनाई जा सके।

चिट्ठियाँ लाने ले जाने के लिए कबूतरों का इस्तेमाल तो सदियों पहले से होता रहा है। बायोनिक्स का विज्ञान कबूतरों के इस हुनर के राज़ के बारे में जानने की कोशिश कर रहा है।



बायोनिक्स एक नया विज्ञान है। इस क्षेत्र में नई-नई खोजें हो रही हैं। अनेक पशु-पक्षियों, कीड़ों-पतंगों पर अध्ययनों से कई रहस्य सामने आ रहे हैं। हम कई उपयोगी जान-कारियाँ हासिल कर रहे हैं। ●

कश्मीरी लोककथा

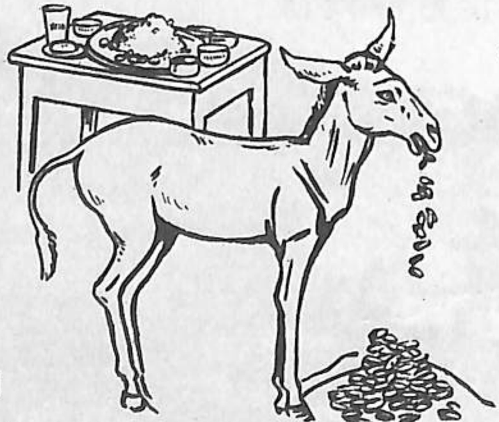
रस्सीये जकड़ : डण्डे मार

एक गाँव में एक दर्ज़ी रहता था। उसने एक बकरी पाली हुई थी। वह बकरी बातें करती थी। उस दर्ज़ी के तीन बेटे थे। वे जब बड़े हुए तो दर्ज़ी ने उन्हें बकरी चराने का काम सौंपा। बकरी दिन भर चरती और भर पेट खाती। पर जब दर्ज़ी शाम को उस पर हाथ फेर कर उससे हाल पूछता, तो वह कहती, "आपके बेटे मुझे मैदान में एक खूँटे से बाँध कर रखते हैं। वह स्वयं खेलते रहते हैं और मैं भूखी रहती हूँ।"



दर्ज़ी बहुत दिनों तक बात टालता रहा। फिर एक दिन उसने बेटों को डाँट-डपट कर कहा, "निकल जाओ घर से, तुम सब निकम्मे हो।"

बेकसूर लड़के भी एकदम घर से निकल गए। उनके जाने के बाद दर्ज़ी को बकरी की धूर्तता का पता चला। वह अब अपनी गलती पर पछताने लगा और बेटों के घर लौट आने की राह देखता रहा।



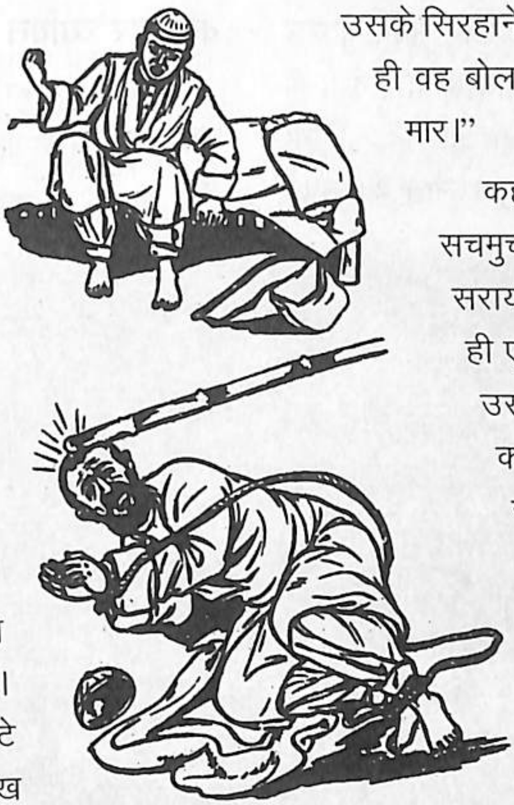
दर्ज़ी के तीनों पुत्रों को घर से दूर एक-दूसरे से अलग-अलग नौकरी मिल गई। उनके मालिक उनके काम से खुश हुए। सबसे बड़ा लड़का लकड़ी का साज़-सामान बनाने वाले के पास नौकर हो गया। दूसरा उसी नगर में एक पनचक्की पर नौकर हो गया और तीसरा एक दूकानदार के यहाँ।

दोनों बड़े भाइयों को पिता की याद सता रही थी। उन्होंने यह फैसला किया कि वे घर लौट जाएँगे। उनके मालिक भी इस बात को मान गए। बड़े भाई को उसके मालिक ने एक छोटी-सी मेज़ देकर कहा, "बेटा, इस मेज़ से जिस तरह का भोजन माँगोगे, वह तुम्हें इस पर तैयार मिलेगा।"

दूसरे भाई को चक्कीवाले ने एक गधा देते हुए कहा, "जाओ, खुश रहो। इस गधे को भी ले जाओ। ज्यों ही तुम इससे कहोगे- 'मुझे मुहरें दो,' त्यों ही यह मुँह से मुहरें उगलने लगेगा। जब तक तुम 'बस करो' न कहोगे यह मुहरें उगलता रहेगा।"

दोनों भाई अपने-अपने उपहार लेकर घर की ओर चल दिए। वे शाम के समय एक गाँव में पहुँचे और रात भर आराम करने के लिए एक सराय में ठहरे। सरायवाला दुष्ट था। उसने उन्हें रात भर रहने की जगह दी पर बात ही बात में उनके उपहारों की विशेषता के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर ली। जब उसे मेज़ और गधे के गुणों का पता चला तो उसने उन्हें हथियाने की बात

सोची। वे दोनों भाई जब सोए हुए खर्राटे भर रहे थे, उस दुष्ट ने मेज़ के बदले हू-ब-हू वैसी ही दूसरी मेज़ रख दी और उसी शक्ल का दूसरा गधा खूँटे से बाँध दिया। सुबह वे दोनों भाई इन नकली चीज़ों को लेकर चल दिए।



घर पहुँचे तो दर्ज़ी बहुत खुश हुआ। उसने गधे और मेज़ की करामात सुनी तो और भी प्रसन्न हो गया। परन्तु जब दोनों भाइयों ने अपने-अपने उपहार की परख और प्रदर्शन करना चाहा, तो हैरान हो गए। दर्ज़ी यह देख बड़ा नाराज़ हो गया। वह समझा कि बेटे मुझसे धोखा कर रहे हैं। बहुत समझाने पर भी उसकी शंका दूर न हुई। अतः दोनों भाइयों ने अपने छोटे भाई को अपनी आपबीती लिख कर भेजी और उसे आने और सराय वाले से सतर्क रहने को कहा।

पत्र पाकर तीसरे भाई ने अपने मालिक से घर जाने की स्वीकृति ली, तो उसे उपहार में एक थैला देते हुए मालिक ने कहा, "यह थैला लो। इसका गुण यह है कि जब कभी तुमको सहायता की ज़रूरत पड़े तो इससे यों कहो, *रस्सीये जकड़ और डण्डे मार।* तुम्हारे कहने के साथ ही इसमें से एक रस्सी निकलेगी और तुम्हारे शत्रु को जकड़ लेगी। साथ ही इसमें से एक डण्डा निकल आएगा जो उसकी खोपड़ी पर चोट करने लगेगा।"

खैर, यह दर्ज़ी पुत्र भी घर की ओर चला और रात उसी सराय में रुका। जब वह सोने लगा तो उस थैले को अपने तकिए के नीचे यों रखा, जिससे सराय वाले को शंका हुई कि इसमें माल भरा है। आधी रात को सरायवाला थैले का धन चुराने के इरादे से आया। दर्ज़ी पुत्र इसी ताक में आँखें बन्द किए हुए लेटा हुआ था। ज्यों ही सराय वाले ने उसके सिरहाने के नीचे से थैला निकाला त्यों ही वह बोला, "रस्सीये जकड़, और डण्डे मार।"

कहने की देर थी कि थैले में से सचमुच ही एक रस्सी निकली, जिसने सराय वाले को जकड़ लिया। साथ ही एक डण्डा भी उछल-उछल कर उसकी खोपड़ी पर पटाख-पटाख करता हुआ बरसने लगा। सरायवाला रोने-चिल्लाने लगा और कहने लगा, "भाई माफ करो, माफ करो। हाय मरा!... हाय मरा!"

जब उस डण्डे ने सरायवाले की खोपड़ी पर अच्छी मार बरसाई तो दर्ज़ी-पुत्र बोला, "बदमाश कहीं का, ये चीज़ें तभी थैले में लौटेंगी जब तू मेरे भाइयों से हथियाया हुआ माल वापिस करेगा।"

लहूलुहान सरायवाले ने उससे वादा किया तो उसने दोनों चीज़ों को वापस बुलाया। इसके बाद सरायवाले से मेज़ और असली गधा प्राप्त करने के बाद वह घर लौटा।

जब वह घर पहुँचा तो तीनों भाइयों ने पिता सहित खूब दावत उड़ाई। पिता अपने पुत्रों की सफलता पर बड़ा खुश हुआ। वह धूर्त बकरी रात के समय ही घर से भाग गई। अब बाप बेटे उन तीनों करामाती चीज़ों के कारण बड़े सुख से रहने लगे। ●

क्या सपनों का कोई छिपा अर्थ होता है?

डॉ. विनय मिश्र

हममें से अधिकतर लोगों के लिए सपने अक्सर उत्तेजक व अबूझ होते हैं। वे नींद के दौरान देखी गई किसी रंगीन फिल्म की तरह होते हैं - जिन्हें हम नींद से उठते ही अक्सर भूल जाते हैं। सपने डरावने भी होते हैं और मज़ेदार भी। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई सपना हमें बार-बार आता है। हम अक्सर सोचते हैं कि क्या सपने में देखी गई चीज़ों या घटनाओं का कोई अर्थ होता है? कई बार हम सपने में देखते हैं कि हम दोस्तों से लड़ रहे हैं या अपने से कई गुना ज़्यादा ताकतवर को बुरी तरह पीट रहे हैं। इसका क्या मतलब है? ऐसा क्यों होता है?



निश्चय ही सपने हमारी नींद का सबसे नाटकीय पहलू हैं। हम नहीं जानते कि पशु-पक्षियों को भी सपने आते हैं या नहीं। लेकिन सवाल यह है कि हमें सपने क्यों आते हैं?

सपनों से सम्बंधित कुछ प्रश्नों के उत्तर यहाँ प्रस्तुत हैं। ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि ये अन्तिम उत्तर हैं। लेकिन यह ज़रूर कहा जा सकता है कि मनोवैज्ञानिकों के पास सपनों के बारे में जो भी वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध है, ये उसका प्रतिनिधित्व ज़रूर करते हैं।

क्या हर व्यक्ति सपने देखता है?

जवाब है- हाँ! बच्चों को (कई बड़ों को भी) नींद से उठने के बाद अक्सर सपने याद नहीं रहते। नींद के बारे में कई शोध किए गए हैं। इनसे पता चला है कि सोते समय दिमाग का व्यवहार अलग-अलग तरह का होता है। इसमें एक चरण है जिसे आर. ई. एम. या रैपिड आई मूवमेंट कहते हैं। आमतौर पर यह चरण पंद्रह से पैंतालीस मिनिट का होता है। इस चरण में बन्द आँखों के नीचे पुतलियाँ तेज़ी से हिलती-सी दिखाई देती हैं। जब लोगों को इस चरण में नींद से उठाया जाता है तो दूसरे चरण की अपेक्षा अधिक लोग इस चरण में आए सपने का बयान कर पाते हैं। इससे ऐसा लगता है कि काफी लोग सपने देखते हैं।

सपने कितनी देर चलते हैं?

बहुत से बच्चों को लगता है कि सपना सिर्फ कुछ पल के लिए आता है। लेकिन ऐसा नहीं है। सपना जितना लम्बा मालूम हो, वह वास्तव में उतना ही लम्बा होता है।

क्या बाहरी घटनाएँ सपनों में प्रवेश कर सकती हैं?

हाँ। कम से कम कुछ हद तक तो ज़रूर। इसे जानने के लिए एक बार वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने गहरी नींद में सपने देख रहे कुछ लोगों के बिस्तर पर पानी छिड़क दिया। बाद में जब उन्हें उठाया गया तो उनमें से आधे से अधिक लोगों ने बताया कि उन्होंने सपने में पानी देखा था।

क्या बच्चे सपनों को जान-बूझकर भुला देते हैं?

क्या बच्चे सपनों को इसलिए भुला देते हैं कि सपने उन्हें परेशान करते हैं? शायद नहीं। वैज्ञानिक खोजों से पता चलता है कि यदि जागने के बाद बच्चा रोज़ के कामकाज में लग जाए तो वह रात में देखे गए सपने को भूल जाता है। और अगर वह नींद खुलने के बाद कुछ देर बिस्तर पर ही लेटा रहे और रात को देखे सपने के बारे में ही सोचता रहे तो सपना न सिर्फ उसे याद आ जाएगा बल्कि याद हो जाएगा। शोध बताते हैं कि सपनों का याद रहना इस बात पर निर्भर है कि नींद से उठने के बाद हम क्या करते हैं।

सपनों के छिपे संकेतों और अर्थों के बारे में लोगों की अलग-अलग राय है। इनमें निम्न दो तरह की राय खासतौर पर उभरकर आती है। अब तुम खुद फैसला करो कि तुम किसे ठीक मानना चाहोगे।

मनोविश्लेषक की राय

मनोविश्लेषक मानते हैं कि सपने किसी व्यक्ति के अचेतन मस्तिष्क या सोये हुए दिमाग को समझने का एक अच्छा माध्यम है। उनका कहना है कि जागते हुए हम जो करना चाहते हैं लेकिन कर नहीं पाते - वह हम सपने में कर डालते हैं। जैसे कि किसी ने हमें गुस्सा दिलाया, हम उसकी ठुकाई करना चाहते हैं, लेकिन वह हमसे कई गुना तगड़ा है। तो हम सपने में देखेंगे कि हमने उसे उल्टा टाँग रखा है और उसे कोड़े मार रहे हैं। या उसे पहाड़ से नीचे धकेल रहे हैं। या आग में फेंक रहे हैं वगैरह। दिन में तो ऐसे विचारों को हम मन के बाहर नहीं आने देते, लेकिन सपने में कौन किसे रोकता है?

सपने चाहे जितने अस्पष्ट या अधूरे या उलझे हुए हों, उनमें कोई न कोई संदेश ज़रूर छिपा होता है।

सपने-जानकारी पचाने की मशीन

कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि सपनों का कोई छिपा हुआ अर्थ नहीं होता। सपने अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति का उपाय भी नहीं है। इनका कहना है कि रात के समय हमारे दिमाग के भीतर जो कुछ चलता रहता है - सपने उसी की एक छोटी-सी झलक हैं।

इसका मतलब यह है कि दिन में हमारा मस्तिष्क जो भी सूचनाएँ इकट्ठा करता है, रात के समय दिमाग उनकी छँटाई करता है। दिमाग फालतू सूचनाएँ अपनी स्मृति से मिटा देता है और काम की सूचनाओं को ठीक से जमा देता है। यदि दिमाग ऐसा न करे तो उसमें बहुत सारी गैरज़रूरी सूचनाओं का ढेर जमा होता जाएगा।

कुल मिलाकर इस मान्यता के पक्ष में बहुत ही कम तर्क हैं कि सपने अवचेतन का सन्देश या भविष्य में होने वाली घटनाओं की पूर्व सूचना होते हैं।

क्या इसका मतलब यह है कि सपनों का कोई अर्थ नहीं होता? हरगिज़ नहीं। क्योंकि सपने स्मृति से उपजते हैं इसलिए उनसे हमें सपना देखने वाले के बारे में काफी कुछ पता चलता है। ●

चीड़ों पर चाँदनी



निर्मल वर्मा

निर्मल वर्मा हमारे समय के एक महत्वपूर्ण लेखक हैं। उन्हें हिन्दी में नई कहानी का पहला कहानीकार माना जाता है। 1929 में शिमला में जन्मे निर्मल वर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 26 अक्टूबर, 2005 को उनका निधन हो गया। प्रस्तुत अंश निर्मल वर्मा की चर्चित पुस्तक ***चीड़ों पर चाँदनी*** से लिया गया है।



इन पहाड़ों के पीछे न जाने क्या होगा? जब हम छोटे थे, तो अपने घर के बरामदे में खड़े होकर अक्सर एक-दूसरे से यह प्रश्न पूछा करते थे। उन दिनों छुट्टी लेकर पहाड़ों पर जाने की ज़रूरत महसूस नहीं होती थी-वे हमेशा हमारे संग थे, हमारे खेलों में, हमारे सपनों में। तब पहाड़ों की शक्ल, उनकी भाव-भंगिमा बिल्कुल अलग, दूसरे किस्म की थी, जैसे माँ की शक्ल जो बच्चों की आँखों में होती है, वह दूसरों के लिए नहीं होती। उसकी पहचान ही अलग होती है।.....

.....क्या यह शिमला है-हमारा अपना शहर-या हम भूल से कहीं और चले आए हैं? हम नहीं जानते कि पिछली रात जब हम बेखबर सो रहे थे, बर्फ चुपचाप गिरती रही थी।



खिड़की के सामने पुराना, चिर-परिचित देवदार का वृक्ष था, जिसकी नंगी शाखों पर रूई के मोटे-मोटे गालों-सी बर्फ चिपक गई थी। लगता था, जैसे वह सान्ता-क्लॉज़ हो, एक रात में ही जिसके बाल सन-से सफेद हो गए हैं। टेलीग्राफ के तार बर्फ की परतों में लिपटकर मोटी सफेद रस्सियों की तरह आकाश में खिंच आए थे-हर कुछ क्षणों बाद इन रस्सियों पर बर्फ के आइसिकल(बर्फ की बत्तियाँ) फर में लिपटी सफेद गिलहरियों-से नीचे लटक आते थे।

कुछ देर बाद धूप निकल आती है-नीले चमचमाते आकाश के नीचे बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ धूप सेंकने के लिए अपना चेहरा बादलों के बाहर निकाल लेती हैं-चेहरा जो बर्फ का मोज़ायक है-पहाड़ियों के ऊँचे-नीचे पोर्टल्ज़ (प्रवेशद्वार) पर टिका हुआ-जिस पर रंग बिरंगे पत्थरों-से विशाल हिमखण्ड चमक रहे हैं। दिन भर इन चोटियों पर पीले या सलेटी रंग के बादलों का मेला लगा रहता है-पाउडर-पफ़-सा हर बादल हवा में तिरता हुआ अपने सुनहले पंखों से बर्फ के इस मोज़ायक को पोंछ जाता है। बर्फ और बादलों का यह चिरन्तन खेल नारकण्डा, डलहौजी, शिमला-हर जगह देखा है, किन्तु गुलमर्ग की उस चाँदनी रात में जो भूले-से अचानक देखा था, वह आज भी नहीं भूल पाया हूँ।

शुरु अप्रैल के दिन थे। हवा में चाकू की पैनी धार-सा तीखापन था। टूरिस्टों का ताँता अभी आरम्भ नहीं हुआ था और जिस कमरे में मैं ठहरा था, उसके अलावा होटल के सब कमरे खाली पड़े थे। आधी रात अचानक हवा का वेग तेज़ हो गया। मैं दरवाज़ा बन्द करने उठा हूँगा- लेकिन आँख खुलते ही मेरे भीतर एकाएक सब कुछ शान्त, निस्पन्द-सा हो आया था।

कमरे में हल्की, फीकी-सी चाँदनी बिखर आई थी। आँखें खिड़की के पार बीच के तरल अँधेरे को लाँघती हुई खिलनमर्ग की हिमाच्छादित चोटियों पर जा टिकीं। चाँदनी के छुई-मुई-से झिलमिलाते कण ऊपर से नीचे तक बर्फ पर फिसल रहे थे। सब कुछ एक-दूसरे में चुपचाप सिमट आया था। लगता था, जैसे संगमरमर के सफेद चूरे की हल्की-हल्की बारिश हो रही हो। एक पीला उजला-सा आलोक होटल के बाहर पोलोग्राउण्ड की घास पर फैलता हुआ हवा में बार-बार काँप उठता था। बादल, बर्फ, चाँदनी.... तीनों के अलग-अलग रंग थे। अलग-अलग लय थी। उस क्षण मुझे लगा मानो कि किसी मायावी संगीत के चमकीले सुरों ने समस्त वन्य स्थल को अपनी स्वप्निल, निस्पन्द पंखों के भीतर समेट लिया हो-लगा था जैसे चाँदनी के रेशमी डोरों से खिंचती हुई खिलनमर्ग की बर्फीली पहाड़ियाँ होटल के कमरे के पास तक सरक आई हों और खिड़की के बाहर हाथ फैलाते ही मैं उन्हें छू लूँगा।

पहाड़ों पर चाँदनी का यह अद्‌भुत मायाजाल मैंने पहली बार देखा था और एक अलौकिक विस्मय में मेरी आँखें अनायास मुँद गई थीं। उस रात मुझे लगा था कि पहाड़ों में भी साँप की आँख-जैसा एक अविस्मृत, जादुई सम्मोहन होता है।

जाखू की पहाड़ी से सटा साढ़े सात सौ फीट की ऊँचाई पर हमारा स्कूल था। हर शाम बस्ता झुलाते हुए हम पहाड़ी छायाओं के संग नीचे उतरा करते थे। आज हम बहुत नीचे उतर आए हैं, बचपन की वह बुलन्दी न जाने कहाँ पीछे छूट गई है। उस शाम

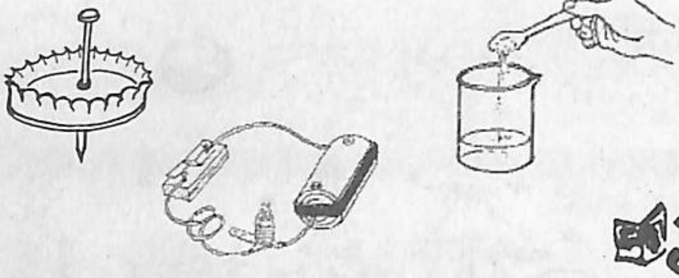


नकुछिया से भीमताल आते हुए उस एकाकी निर्जन रास्ते पर अचानक उन पुरानी चिर-परिचित छायाओं से भेंट हो गई और मैं मंत्रमुग्ध-सा खड़ा रहा।

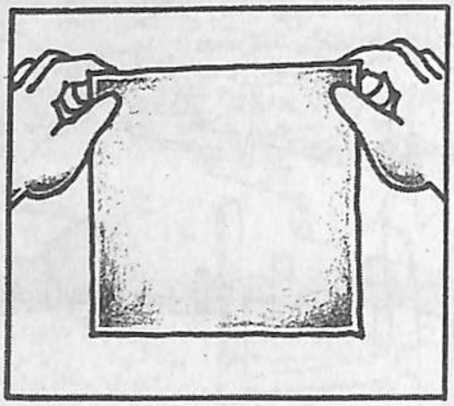
दो पहाड़ियों के बीच गाँव की सलेटी छतें ताश के पत्ते-सी बिखरी थीं, जिन पर हलकी बैंगनी रंग के गुब्बारे उड़ रहे थे। ये गुब्बारे पहली दृष्टि में बादल लगते हैं, किन्तु एकटक देखने से लगता है मानों उनके भीतर से मैली रेत के धुँधले किन्तु तीखी रेखाओं से युक्त पिरामिड उभरने लगे हैं - नीले पिरामिड! आकाश, बादल और हवा से मिलकर ये पिरामिड चित्रित हुए हैं..... शाम की धूमिल छायाओं ने इन्हें जन्म दिया है।

ये पहाड़ी छायाएँ एक-सी हैं, किन्तु हर जगह इनके पल छिन बदलते रंगों को देखा है। जाखू की पहाड़ियों पर स्कूल के कमरे की खिड़की से बाहर इन्हें धीरे-धीरे धूप के संग उतरते देखा है। बहुत बरसों बाद कोटगढ़ के सेब के बगीचों में लेटे हुए पेड़ों की सरसराती टहनियों पर, रानीखेत में चीड़ की सुईनुमा, नुकीली पत्तियों की जाली से इन्हें चुपचाप छनते, झरते देखा है। ●

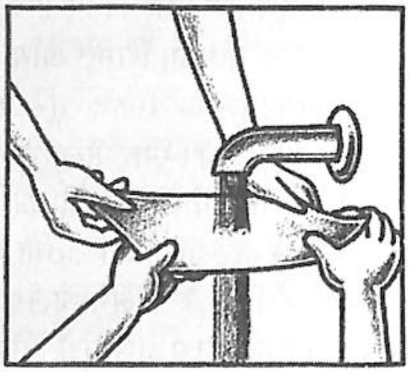
चित्र-धीरन दास



अपनी प्रयोगशाला



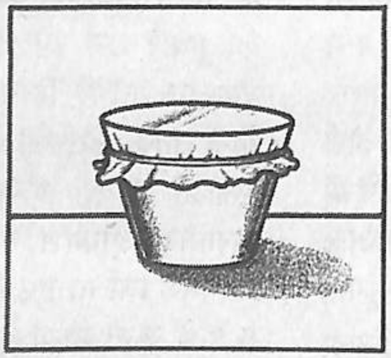
एक रुमाल या कम झीने कपड़े का एक टुकड़ा लो। इसे तानकर पकड़ो और देखो क्या इससे आर-पार दिखता है?



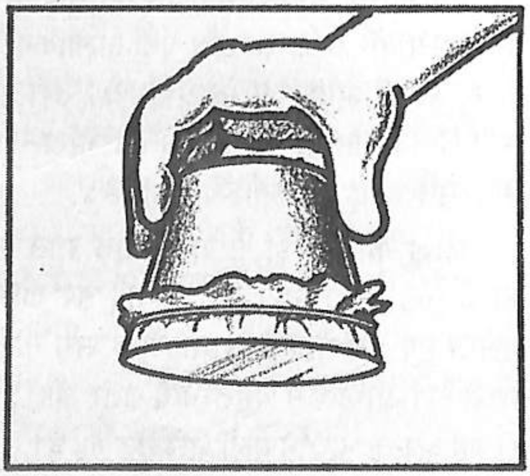
तुम इसे फैलाकर ताने पकड़े रहो और अपने किसी दोस्त से कहो कि वह इस पर पानी डाले।

क्या पानी ठीक तरह से कपड़े से निकल रहा है?

अब थोड़ा गरम पानी कपड़े पर उसी तरह डालकर देखो। पानी के कपड़े से बाहर निकलने पर कोई फर्क पड़ा?



अच्छा, एक काम और करो।

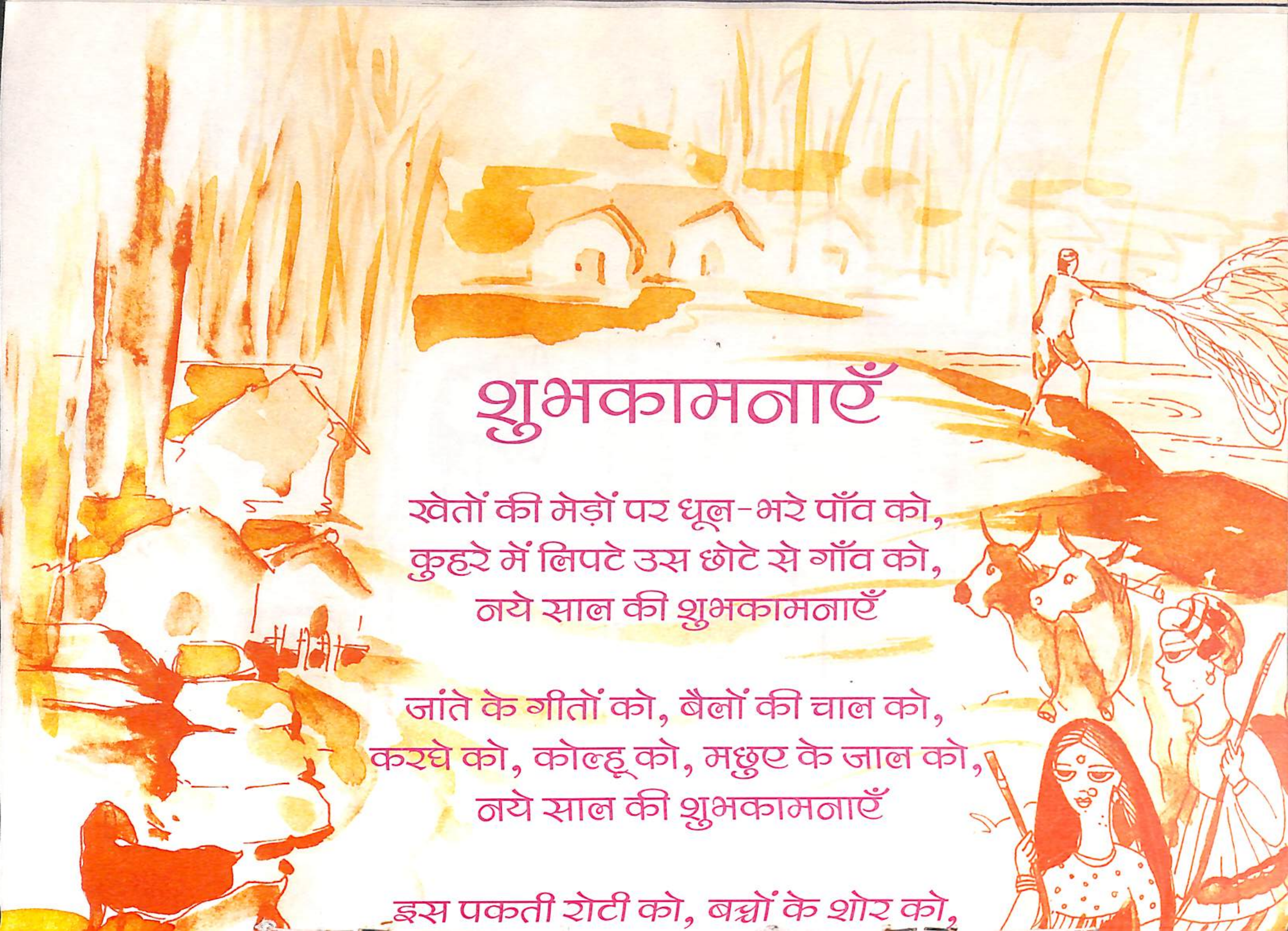


प्लास्टिक का एक पतीला या डिब्बा लो। इसे पानी से भर दो। इसके मुँह पर यही कपड़ा एक रबर के छल्ले की मदद से बाँध दो।

अब आहिस्ता से इसे औंधा कर दो।

क्या हुआ, क्या पानी गिर रहा है?

सोचो ऐसा क्यों हुआ होगा?



शुभकामनाएँ

खेतों की मेड़ों पर धूल-भरे पाँव को,
कुहरे में लिपटे उस छोटे से गाँव को,
नये साल की शुभकामनाएँ

जांते के गीतों को, बैलों की चाल को,
करघे को, कोल्हू को, मछुए के जाल को,
नये साल की शुभकामनाएँ

इस पकती रोटी को, बच्चों के शोर को,

चौके की गुनगुन को, चूल्हे की भोर को,
नये साल की शुभकामनाएँ

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना



चित्र - उदय खरे

बच के रहना रे बाबा!

कई जीव दूसरे जीवों को खाकर ज़िन्दा रहते हैं। शिकारी से बचने के लिए ऐसे कई जीवों में कुछ खास हुनर विकसित हो गए हैं। जीवों की तो छोड़िए पेड़-पौधे भी अपना बचाव कुछ खास तरीकों से करते हैं। इस लेख में ऐसे ही कुछ अजब-गजब तरीकों के बारे में बताया जा रहा है।

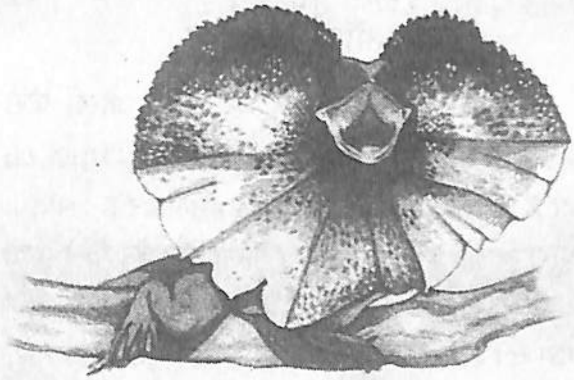
बड़ा हुआ तो क्या हुआ?

कुछ जीव इस संकट की घड़ी में अपने डीलडौल को अचानक बढ़ा लेते हैं। बिल्लियाँ मुश्किलों में अपने पिछले हिस्से को मोड़कर गोल-सा बना लेती हैं और उनकी चमड़ी के रोएँ या फर खड़े हो जाते हैं। जब उन्हें लगता है कि बचाव का यह तरीका काम नहीं करेगा तो वे गुर्राना शुरू करती हैं। डरा हुआ उल्लू भी अपने पँखों को फैला लेता है। यहाँ इस **पफरफिश** को देखो। यह शिकारी से बचने के लिए अपने शरीर को फैलाकर काँटेदार गेंद सरीखा बना लेती है। अब कौन शिकारी इस काँटेदार गेंद को खाना चाहेगा।



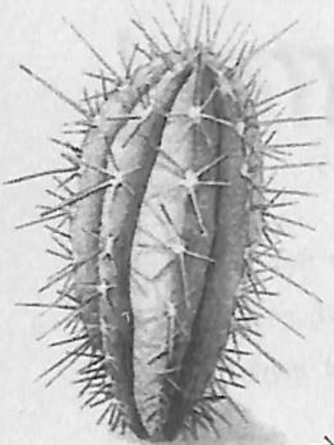
पूँछ से चकमा

कभी-कभी शिकारियों को किसी तरह भौंचक कर देना भी काफी होता है। कुछ कीट दुश्मन से बचने के लिए अपने निचले पँखों को फैला लेते हैं। कुछ छिपकलियों के गले में रंगीन गुच्छे होते हैं जो झट से फूल जाते हैं। डरी हुई छिपकली इस गुच्छे को मुश्किल वक्त में इस तरह फैला लेती है कि लगता है उसके सिर के आसपास एक पँखानुमा चीज़ लगी है। इस नए रूप में छिपकली कुछ ज़्यादा ही भयानक लगती है। दुश्मन इसके झाँसे में आ जाता है और छिपकली सुरक्षित बच जाती है। छिपकलियों के पूँछ छोड़कर भागने की घटना तो बहुत आम है। यह भी छिपकली के बचाव का एक तरीका है। इसमें शिकारी छोड़ी गई पूँछ में फँस कर रह जाता है और छिपकली को भागने के लिए थोड़ा समय मिल जाता है। छिपकली की यह पूँछ थोड़े ही दिनों में वापिस उग जाती है। कई तितलियों और पतंगों में भी बचाव का इसी से मिलता-जुलता तरीका पाया जाता है। वे शल्क या ऊपरी चमड़ी को छोड़कर छू हो जाते हैं।

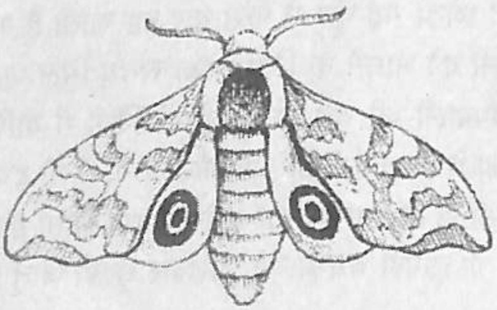


कवच से रक्षा

एक तरफ आर्माडिलो जैसे कुछ जीव हैं जिनके शरीर में ही एक मजबूत कवच होता है। घोंघे, सीपदार मछली आदि दुश्मन को देखते ही अपनी खोल में घुस जाते हैं। कुछ जानवर सींगों, पंजों,



नाखूनों से अपनी रक्षा करते हैं। कई इल्लियों के आवरण में ऐसे काँटे होते हैं कि शिकारी खाने से पहले दो बार सोचेगा। कई पौधे भी बचाव के लिए यही तरीका इस्तेमाल करते हैं जैसे नागफनी या गुलाब की काँटेदार झाड़ियाँ।



ये आँखें देखकर

कुछ पतिंगों के पँखों में बड़ी-बड़ी आँखों जैसे धब्बे होते हैं। शिकारी अकसर इन आँखों से धोखा खा जाता है। होता यह है कि जैसे ही हमलावर इन पतिंगों के पास आता है ये अपने पँख फैला लेते हैं। फैले पँखों पर दो बड़ी-बड़ी आँखों की आकृति उभरती है। दुश्मन को लगता है कि उसके सामने एक बड़ा भारी जीव है जिसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी आँखें हैं। दक्षिण अमेरिका में पाया जाने वाला एक मेंढक भी बचाव का यही तरीका अपनाता है। उसकी पीठ पर भी दो बड़ी-बड़ी-सी आँखों जैसे दिखने वाले धब्बे होते हैं। जब उसका सामना शिकारी से होता है तो वह अपनी पीठ फुला लेता है। इस फूली हुई पीठ पर उभरी दो बड़ी-बड़ी आँखें शिकारी के हौंसले पस्त कर देती हैं।

बचाव डंके की चोट से

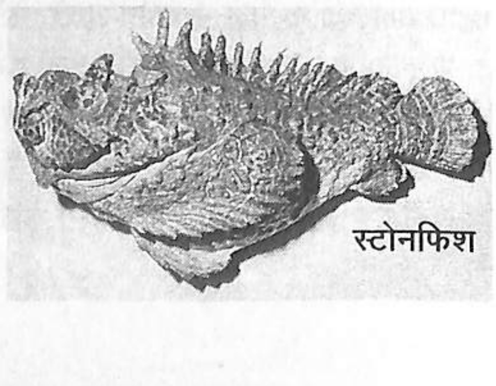
कभी-कभी हमला ही बचाव का सबसे अच्छा तरीका होता है। मधुमक्खियाँ, बर्र, चींटियों से लेकर साँप जैसे जीव भी बचाव का यही तरीका अपनाते हैं। ये जीव आमतौर पर चटख रंग के होते हैं जिससे शिकारी इन्हें दूर से ही पहचान लेते हैं और इनसे तौबा कर लेते हैं।

नीम चढ़ा करेला

कई इल्लियाँ,मेंढक,सरटक (छिपकली जैसा एक जीव) जैसे कुछ जीव बचाव के लिए एक खास तरीका अपनाते हैं। इनके चटख रंगों के कारण ये दुश्मन द्वारा पहचाने जाते हैं।



और इनसे दूर रहना पसंद करते हैं। दरअसल इनमें से कुछ जीव (जैसे व्हिप स्कॉर्पियन) हमलावर पर अम्लों का छिड़काव करते हैं। अमेरिका का एक माँसाहारी पशु है स्कंक। यह अपने हमलावर के पास आने पर एक बहुत ही दुर्गंध वाला द्रव छोड़ता है। कुछ पौधे खरोंच लगने या अपने तने में घाव होने पर एक ज़हरीला द्रव छोड़ते हैं। कुछ पौधों में ज़हरीले रेशे और काँटे होते हैं जो बड़े कारगर तरीके से उनका बचाव करते हैं। **स्टोनफिश** अपने बनावटी काँटों का जाल फैलाती है। इसके काँटों पर पैर रख गुज़रना घातक हो सकता है। ऐसे ही रोएँ वाली कुछ इल्लियाँ हमारे शरीर पर खुजली या लाल दाने उभार सकती हैं। कौन होगा जो मधुमक्खियों या बिच्छू बूटी को पकड़ना चाहेगा?



स्टोनफिश

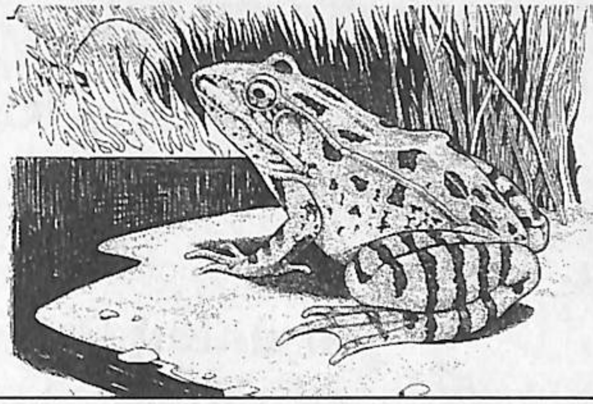


ज़िन्दा या मुर्दा

जब सारी चालें नाकाम हो जाएँ तो बचाव का बस एक तरीका बचता है। बिना हरकत किए निढाल होकर पड़े रहना। इसकी वजह शायद यह है कि ज़्यादातर हमलावर चलते-फिरते जीवों का ही शिकार करते हैं। ऐसे दुश्मनों को बेजान-से पड़े रहकर चकमा देना आसान रहता है। साँपों, गुबरैलों के अलावा कई और जीव भी बचाव का यही तरीका अपनाते हैं। ●

नौ दो ग्यारह

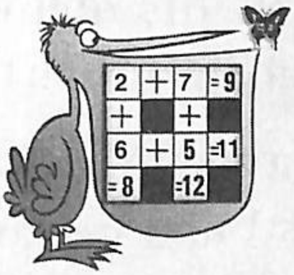
घास में रहने वाला टिड्डा और मेंढक अपना बचाव लम्बी उछालों से करते हैं। ऐसे जीव खतरे का अंदेशा होते ही उछलकर दुश्मन से दूर भाग जाते हैं। खरगोश और हिरण अच्छे दौड़ाक होते हैं। इनकी फुर्ती और इनके पैरों की तेज़ी इन्हें दुश्मन से बचने में मदद करती है।



दिसम्बर 2005 की माथापच्ची एवं चित्र पहेली के हल

1.
9 - 5 = 4
x
6 ÷ 3 = 2
=
1 + 7 = 8

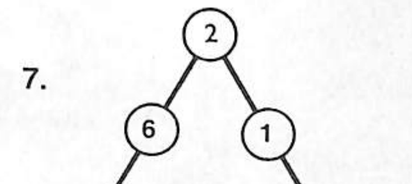
4.



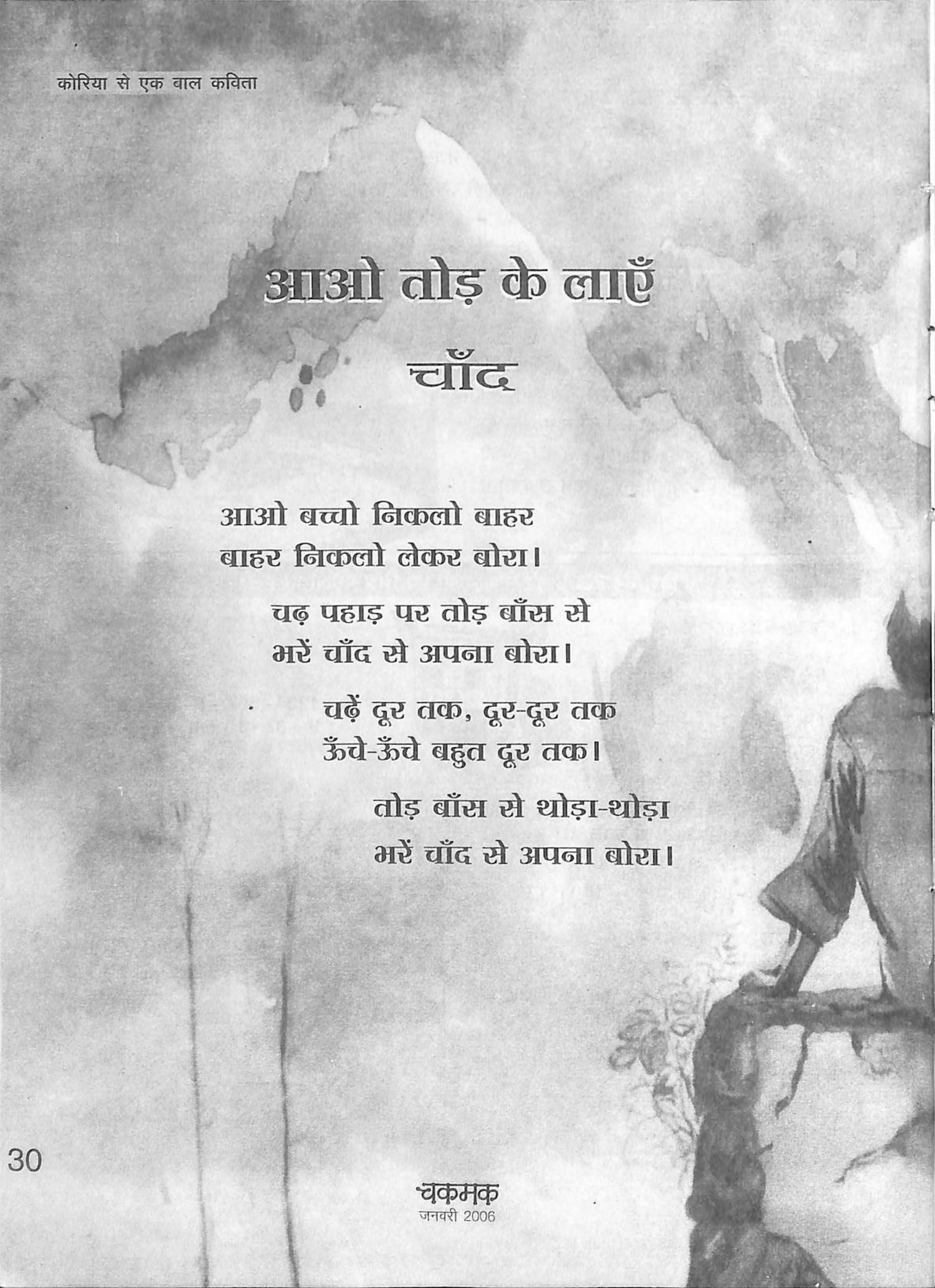
5. 1234 - 567 + 8 - 9 = 666
9 + 87 +6 + 543 + 21 = 666

6. 9 वाली घण्टी को पलट पर बाजू वाली लाइन की 8 वाली घण्टी से बदल दो। अब बाईं तरफ 1+2+7+8 = 18 होंगे तो दाईं तरफ 3+4+5+6 (9 का उल्टा) = 18 होंगे।

7.



अ	ना	र		न	मा	ज
		का		ग		न
	चौ	वी	स		पा	व
पी	पा		र		द	री
त	ल		स	क	री	
रं		मा		मी		
ग	म	ला		ज	ब	ड़ा



आओ तोड़ के लाएँ चाँद

आओ बच्चो निकलो बाहर
बाहर निकलो लेकर बोरा।

चढ़ पहाड़ पर तोड़ बाँस से
भरें चाँद से अपना बोरा।

चढ़ें दूर तक, दूर-दूर तक
ऊँचे-ऊँचे बहुत दूर तक।

तोड़ बाँस से थोड़ा-थोड़ा
भरें चाँद से अपना बोरा।

वहाँ उधर *सुन ही* के घर पर
दीया भी ना जल पाता है।

घना अँधेरा हो जाने पर
काम न कुछ भी हो पाता है।

आओ बच्चो आओ बाहर
आओ तोड़ के लाएँ चाँद।

सुन ही की माँ के कमरे में
लटका दें हम चलकर चाँद।

यून सकॅ जूंग
अनुवाद - दिविक रमेश

सुन ही एक कोरियाई लड़की का नाम है।

साभार - कोरियाई बाल कविताएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया



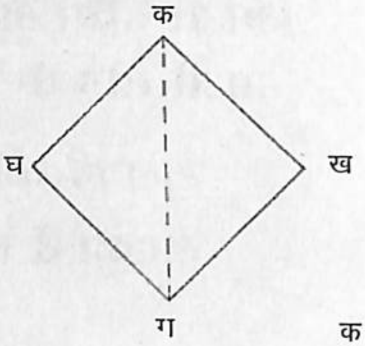
तुम भी बनाओ

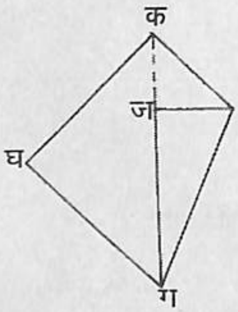
पत्ती

आवश्यक समान

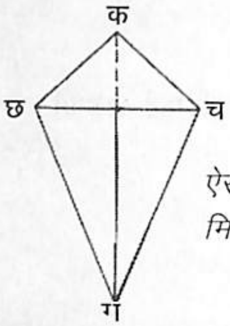
हरे रंग का कागज़, रंगीन रस्सियाँ, रंगने के लिए मोम कलर या स्कैच पेन।

एक वर्गाकार रंगीन कागज़ लो। चित्र के अनुसार **ख** बिंदु को **घ** बिंदु पर रखकर एक मोड़ बनाकर खोल लो।



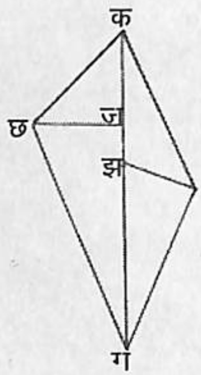


ख बिंदु को **क ग** लाइन पर **ज** बिंदु पर लाकर मोड़ लो। इसी तरह **घ** बिंदु को भी **ज** बिंदु पर लाकर मोड़ लो।

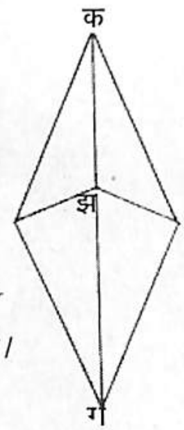


ऐसी आकृति मिलेगी।

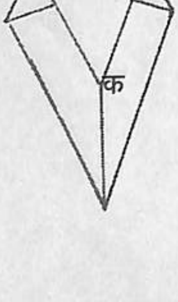
चित्र में दिखाए अनुसार **च** बिंदु को **क** और **ग** बिंदु वाली लाइन पर **झ** पर लाकर मोड़ लो। इसी तरह **छ** बिंदु को भी **झ** बिंदु पर लाकर मोड़ बना लो।



ऐसी आकृति मिलेगी।



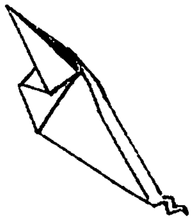
क बिंदु को **झ** बिंदु से थोड़ा-सा आगे तक ले जाकर मोड़ बना लो।



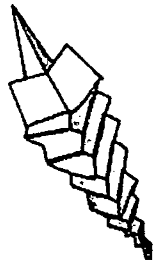


क बिंदु को **झ** बिंदु पर लाइन बनाते हुए वापिस मोड़ दो।

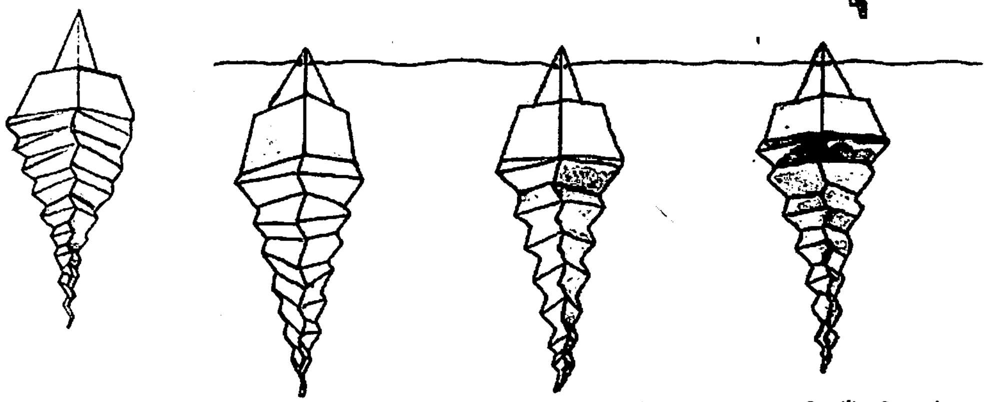
पिछले चित्र में दिख रही चोंच **क झ** को चित्रानुसार पीछे की तरफ मोड़ना है।



निचले हिस्से को सिलवटें बनाते हुए मोड़ना है।



तैयार पत्ती कुछ इस तरह दिखेगी।

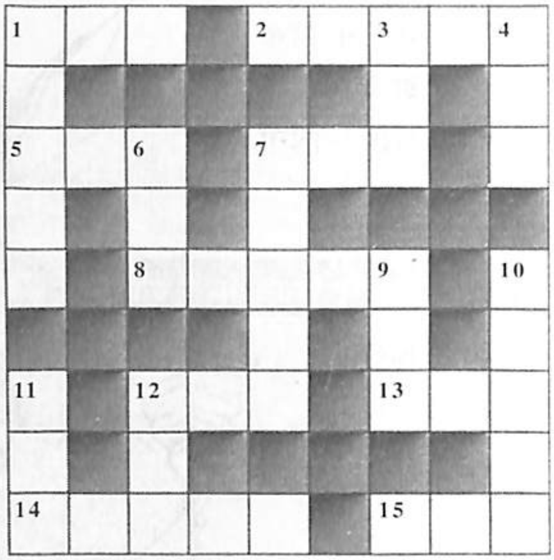


अब सजावट का काम तुम्हारे जिम्मे। चाहो तो इसमें हरा रंग भर लेना और इसकी धारियाँ भी उकेर देना। ऐसी कुछ और पत्तियाँ बनाकर एक रंगीन धागे में पिरो देना। अब पत्तियों की इस खूबसूरत माला को तुम जहाँ चाहो वहाँ लटका दो।

पिछले अंक में **अभाज्य संख्याएँ** लेख में दी गई सारणी में कुछ गल्तियाँ रह गई थीं। क्रॉस का चिह्न जो 4, 6, 8 यानी 2 के अपवर्त्यों पर लगना था वो 3 और 5 पर भी लग गया था। 3 और 5 तो अभाज्य संख्याएँ हैं और उनके अपवर्त्यों (6, 9 , 12 ... तथा 10, 15, ...) पर क्रॉस का चिह्न लगेगा जबकि अभाज्य संख्याओं को गोले लगाकर दिखाया जाना था। यहाँ छन्ना विधि से 1 से 100 तक की अभाज्य संख्याओं को पहचानने वाली सारणी फिर से दी जा रही है।

~~1~~	2	3	~~4~~	5	~~6~~	7	~~8~~	~~9~~	~~10~~
11	~~12~~	13	~~14~~	~~15~~	~~16~~	17	~~18~~	19	~~20~~
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50
51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70
71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

चित्र-पहेली



संकेत
बाएँ से दाएँ



1

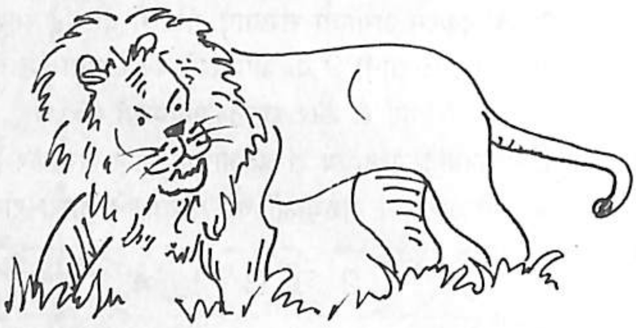


2



5

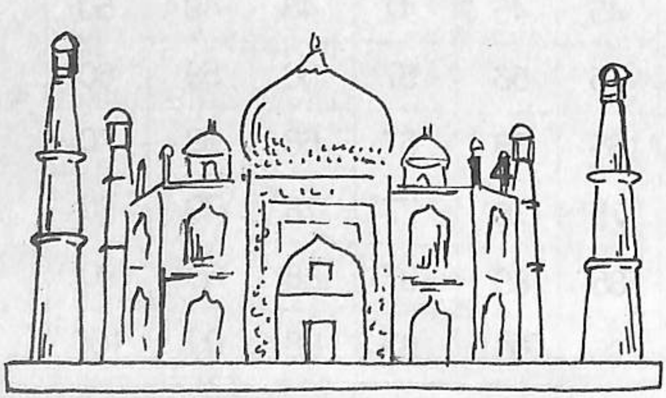
7 'अमरस' में है एक पूर्वी राज्य



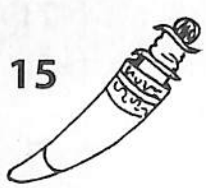
8

12 'नाना कमा के लाना' में है आय

13 'ईना मीना डीका' में है पुरस्कार



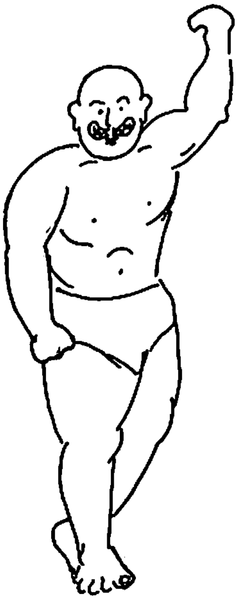
14



15

संकेत ऊपर से नीचे

1



3



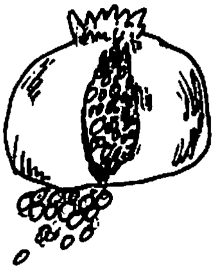
4



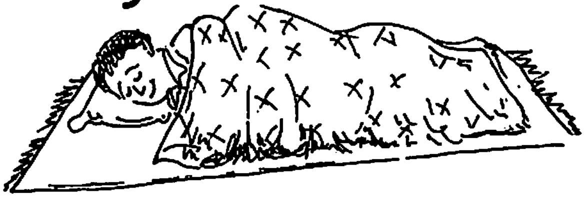
6



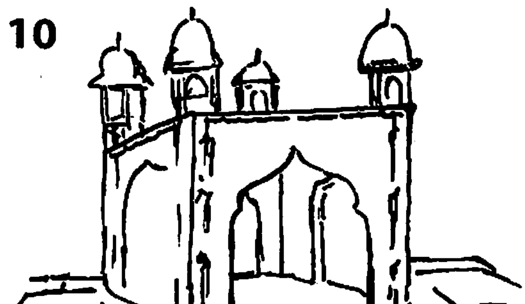
7



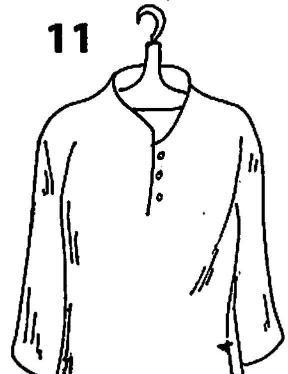
9



10



11



12



चित्र- कैलाश दुबे

मध्यप्रदेश

वित्त प्रबंधन की नई तस्वीर



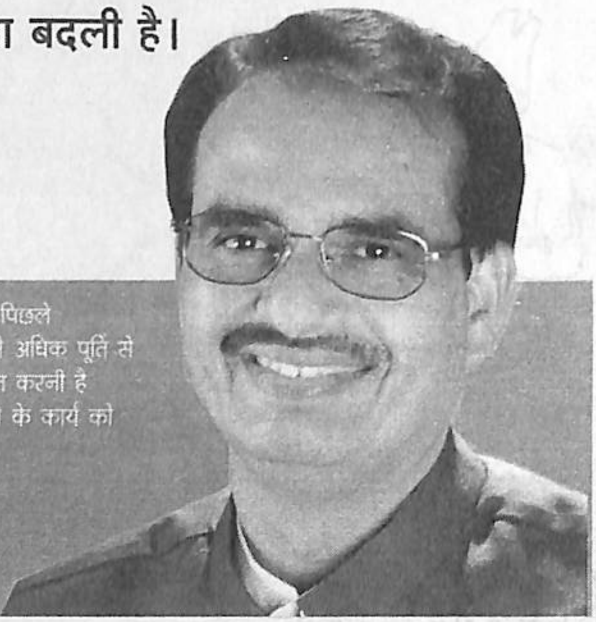




दुष्यन्त कुमार ने कहा है-

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

कुछ इसी तर्ज पर मध्यप्रदेश में वित्त प्रबंधन की दशा और दिशा बदली है।



मध्यप्रदेश के वित्त प्रबंधन की बढ़ती साख पिछले दो वर्षों में विकास ऋण की आवश्यकता से अधिक पूर्ति से स्वयं स्पष्ट है। इसे हमें और मजबूती प्रदान करनी है ताकि प्रदेश में विकास के जनांदोलन बनने के कार्य को और गति मिल सके।

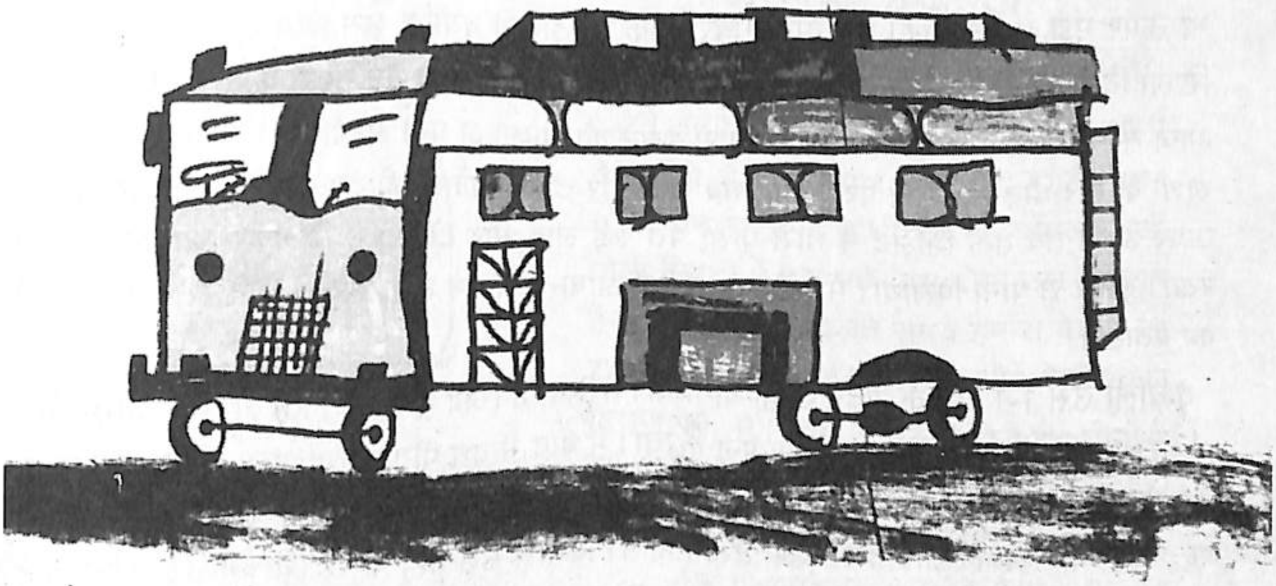
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

जब 16 साल बाद ऐसी स्थिति बनी कि सरकार को एक भी दिन का ओवर ड्राफ्ट न करना पड़ा हो। यह भी तब जबकि पूँजीगत व्यय में 85 प्रतिशत वृद्धि हो गयी हो। विकास ऋण को रोजमर्रा के कार्यों पर खर्च करने की प्रवृत्ति को पलट दिया गया हो। शिक्षा, सड़क, सिंचाई में पिछले वर्षों की तुलना में दोगुना खर्च किया गया हो तथा स्वास्थ्य, बिजली के क्षेत्र में खर्च काफी बढ़ा हो।
बिना कोई टैक्स लगाये राजस्व आमदनी करीब 15 प्रतिशत बढ़ जाए।
प्रदेश की अब तक की सबसे बड़ी वार्षिक योजना, एक भी पैसा कम किये बिना योजना आयोग मंजूर करे और वित्त प्रबंधन सराहे भी।
तब क्या यह संकेतक नहीं बताते कि प्रदेश वित्त प्रबंधन में अग्रणी राज्यों में शामिल हो गया है।

अभी पड़ाव आया है मंजिल भी आयेगी
स्वावलम्बी मध्यप्रदेश की

म.प्र.जनसंपर्क/माध्यम/05

वि.क्र.D64706 दि.7/11/05



पवन कुमार गुप्ता, गंगधार, झालावाड़, राजस्थान

उड़ बच्चे उड़.....

मेरी पाठशाला में संगीत हॉल में पंखे के ऊपरी भाग पर एक जगह बुलबुल ने घोंसला बनाया था और कुछ दिन बाद देखा तो उसमें बच्चों की आवाज आने लगी। कभी-कभी दो बच्चे घोंसले से बाहर आते। मैं रोज सुबह 7.30 से 2 बजे तक की प्रेक्टिस के लिए जाता हूँ। तब हमारा ध्यान माँ बुलबुल की तरफ जाता कि कैसे वह अपने बच्चों को खाना लाती और बच्चे आवाज निकालकर मुँह खोलते। मेरी पाठशाला 12.30 से 5.45 है।

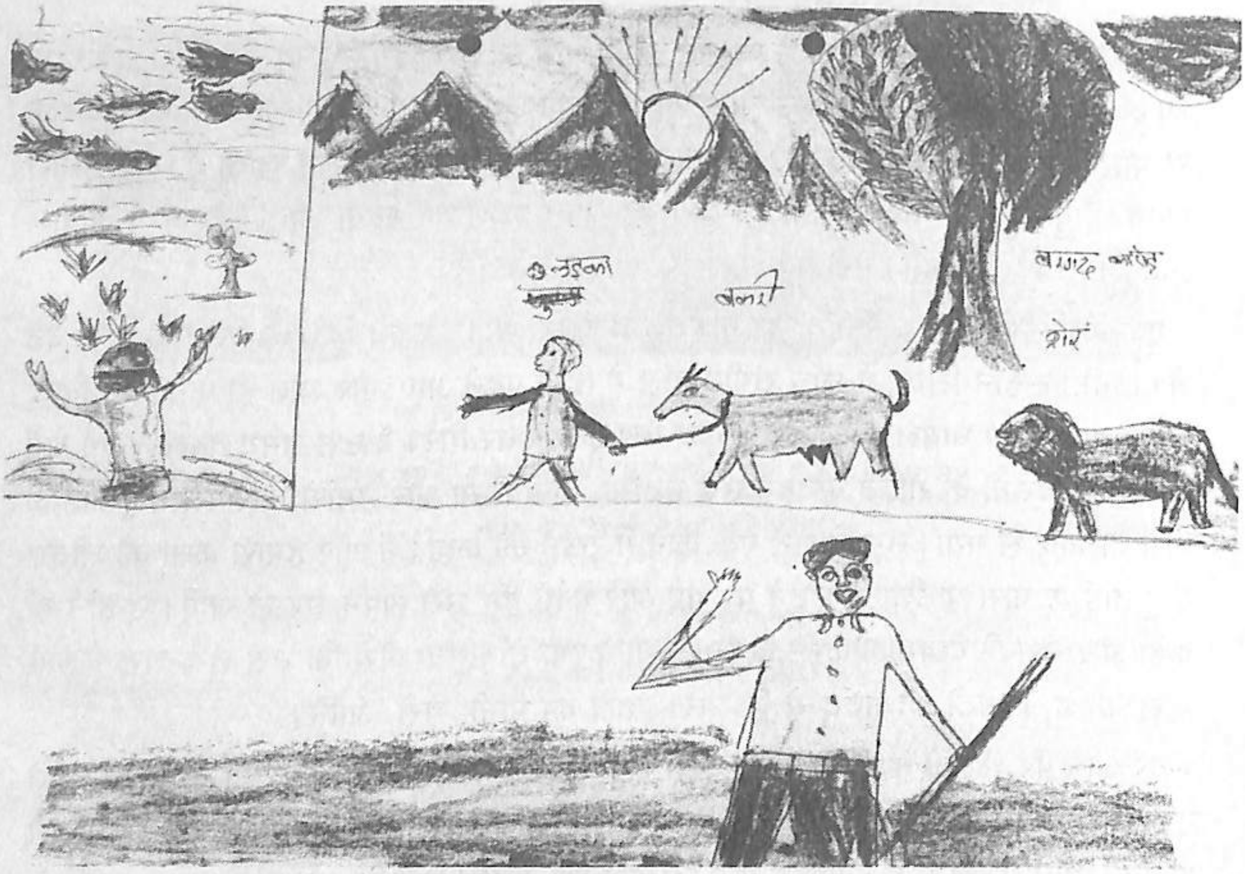
एक दिन संगीत हॉल में हिंदी का पीरियड चल रहा था। संस्कृत के बच्चे दसवीं कक्षा में बैठे थे। हिंदी जिन्होंने लिया, वे छात्र संगीत हॉल में हिंदी पढ़ने आए और आते ही फेन ऑन किया और बेचारा बच्चा घायल हुआ। उसके कुछ पंख इधर-उधर गिरे। मैं उस समय तबला रखने वहाँ आया था। दसवीं के रोहित दादा ने उसे उठाया, पानी दिया और हमारी प्रिंसिपल मंजू ताई के पास दौड़कर ले गया। उन्होंने उसे एक कोने में रखने को कहा। मैं और हमारी कक्षा की शीतल मंजू ताई के पास पाठशाला छूटने पर गए और कहा हम उसे अपने घर ले जाएँ। उन्होंने हाँ कहा और उसकी देखभाल करने के लिए क्या करना ये बताया जैसे कि उसे शुरू-शुरू में पोहे गीले करके, चिमटी की मदद से खिलाना, दाल का पानी, चेरी, आदि।

घर आने पर शीतल ने कहा विराज दादी रखने नहीं देगी तू ले जा। मैं अपने घर डरते-डरते एक छोटे खोके में रखकर लाया। मिलिंद भी मेरे साथ था। दोपहर को सब सो रहे थे। मैं शनिवार हॉफ डे होता है इसलिए मैं 3.30 बजे घर आया। चुपचाप हम दोनों ऊपर मम्मी के

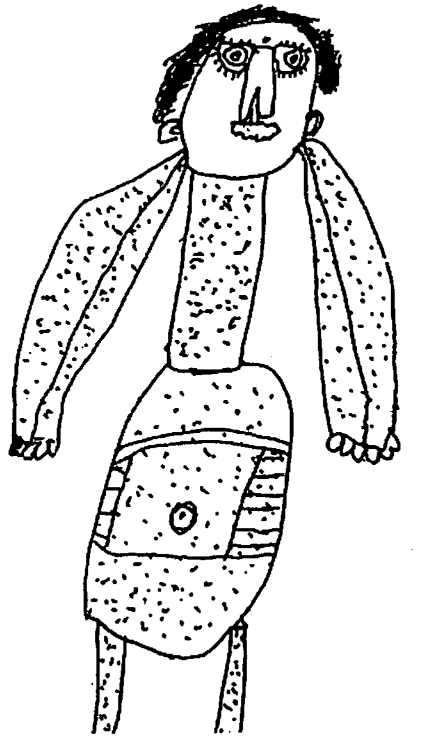
पार्लर में उसे ले गए। दादी ने कहा इतनी देर से ऊपर तुम दोनों क्या कर रहे हो? मैंने कहा कुछ नहीं। और चावल के दाने ले गया। माँ के पार्लर की चिमटी से उसे मिलिंद ने खिलाया। इतने में माँ ऊपर मुझे देखने आई। हम दोनों घबराए कि माँ डाटेंगी क्योंकि उस बच्चे को मिलिंद ने ज्यादा खिला दिया था और उसने 2-3 जगह शूऽऽ और (शी) टट्टी की। मैंने माँ से कहा- कल छोड़ दूँगा, आज तो रहने दो। माँ ने कहा अरे इसे ऐसे रखने की अपेक्षा अ पनी सब्जी की टोकरी में रख। मैं तो खुशी के मारे दौड़कर फ्रीज पर लपका सब जालीदार टोकरी की सब्जी टेबल पर उँड़ेली और दौड़कर ऊपर आया तब तक मिलिंद ने घास-फूस, पत्ते रूई लाई और टोकरी में बिछाकर उस पर बच्चे को रखा। ड्रॉपर से पानी पिलाया। मैं उसे 2-3 घंटे में खाना-पानी देने लगा। स्कूल जाने पर रोज मंजू ताई को बताता।

वे बोली उसे 1-1 घंटे के अंदर खाना-पानी दो। मेरी दादी (जब मैं स्कूल होता तो) उसे देती। स्कूल से आते ही वह मुझे देखकर चुऽऽ आवाज करता। मैं बाद में दूध पीता उसके पास जाकर उसे पानी, पोहे भिगाकर, दाल का पानी देता, चेरी भी देता घास-फूस बदलता। अब वह धीरे-धीरे अच्छा हो रहा था, पंख फड़फड़ाता। सारे दोस्त उसे देखने आते। बिचारा उड़ नहीं पा रहा था। मैं उसे कहता देख वह पक्षी उड़ रहा तू भी उड़ऽ जाऽ। फिर एक दिन अच्छा होने पर मैंने उसे घने पेड़ों के पास छोड़ दिया कहा, उड़ऽऽ मित्र।

- विराज तानाजी तावरे, छठी, फलटण, महाराष्ट्र



- अशोक ठाकुर, चौथी, कँवलासा

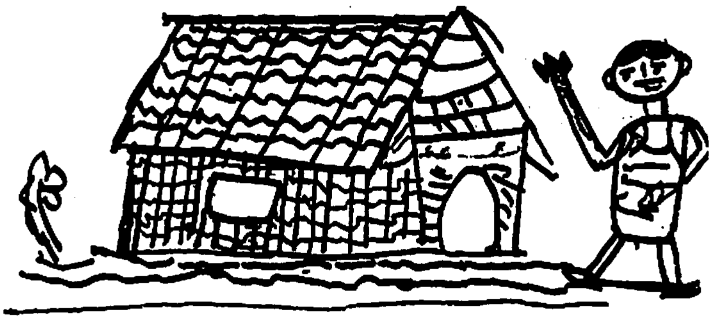


ओमप्रकाश राठौर, हरणगाँव, देवास म.प्र.

जब हम फिसले

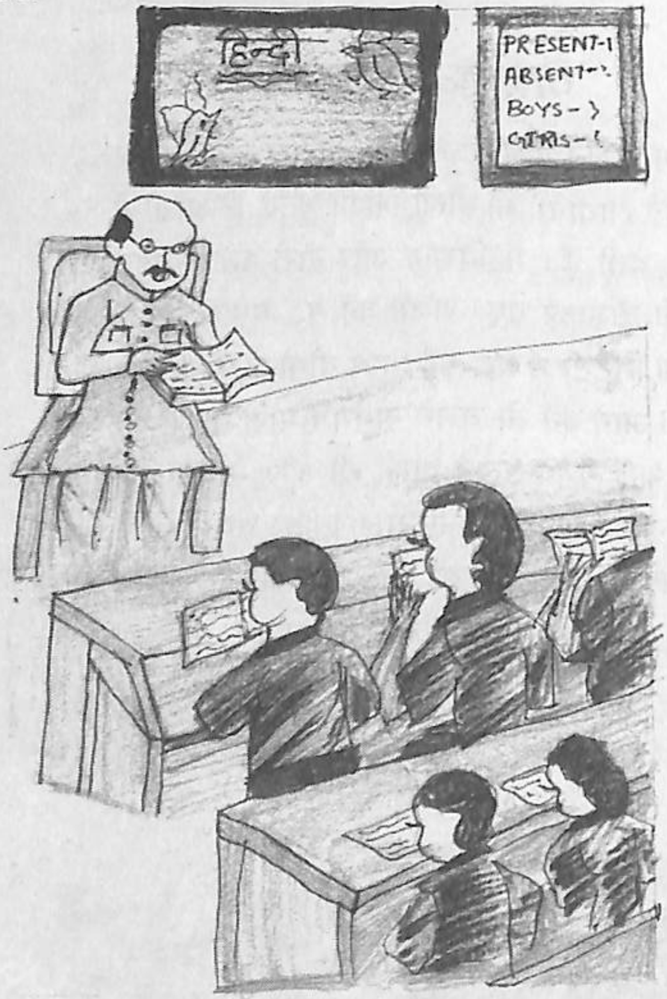
हमारे खेत में भुट्टे लगे हैं। विराज जब मेरे घर खेलने आया तो माँ बोली जाओ भुट्टे ले आओ मैं सेंके देती हूँ। मैं विराज और मेरी छोटी बहन साक्षी दौड़कर गए। साक्षी की नई चप्पल काली गीली मिट्टी में धस गई। हम दोनो उस पर खूब हँसे। आगे बढ़े तो चलते समय हमारा बेलेंस जा रहा था। मैं फिसलने वाली थी और मेरा धक्का विराज को लगा। वह फिसला। फिर हम तीनों ने हेंडपंप के पानी में हाथ पैर धोए। कपड़े बदले। लाए हुए भुट्टे हँसते हँसते खाए।

सृष्टि शिवाजी कदम, बालभवन, फलटण, महाराष्ट्र





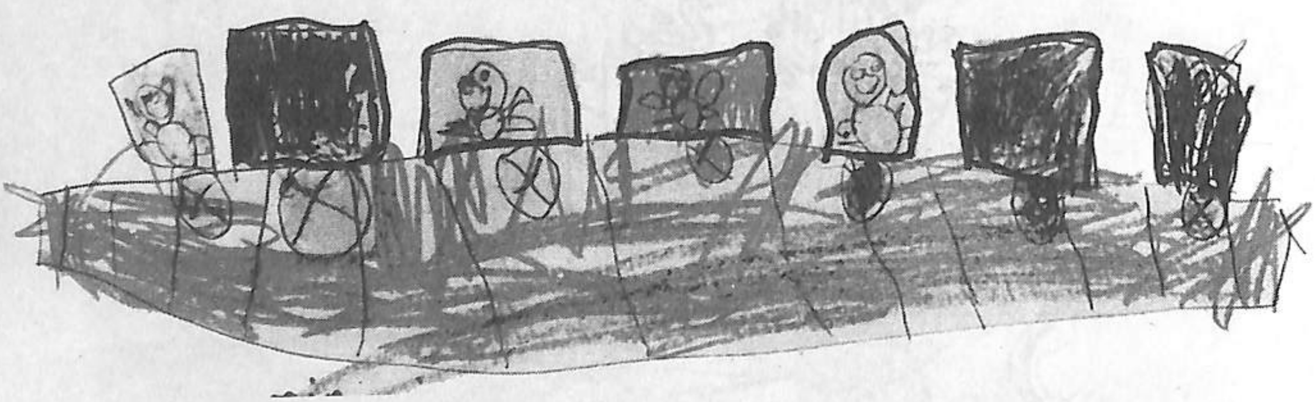
रायसिंग भामटा वसावे, तीसरी, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र



स्वाति सिंह, आठवीं, डिगारू



पूर्णिमा राठी, छठी, जोधपुर, राजस्थान



आकर्षिका श्रीवास्तव, चार वर्ष

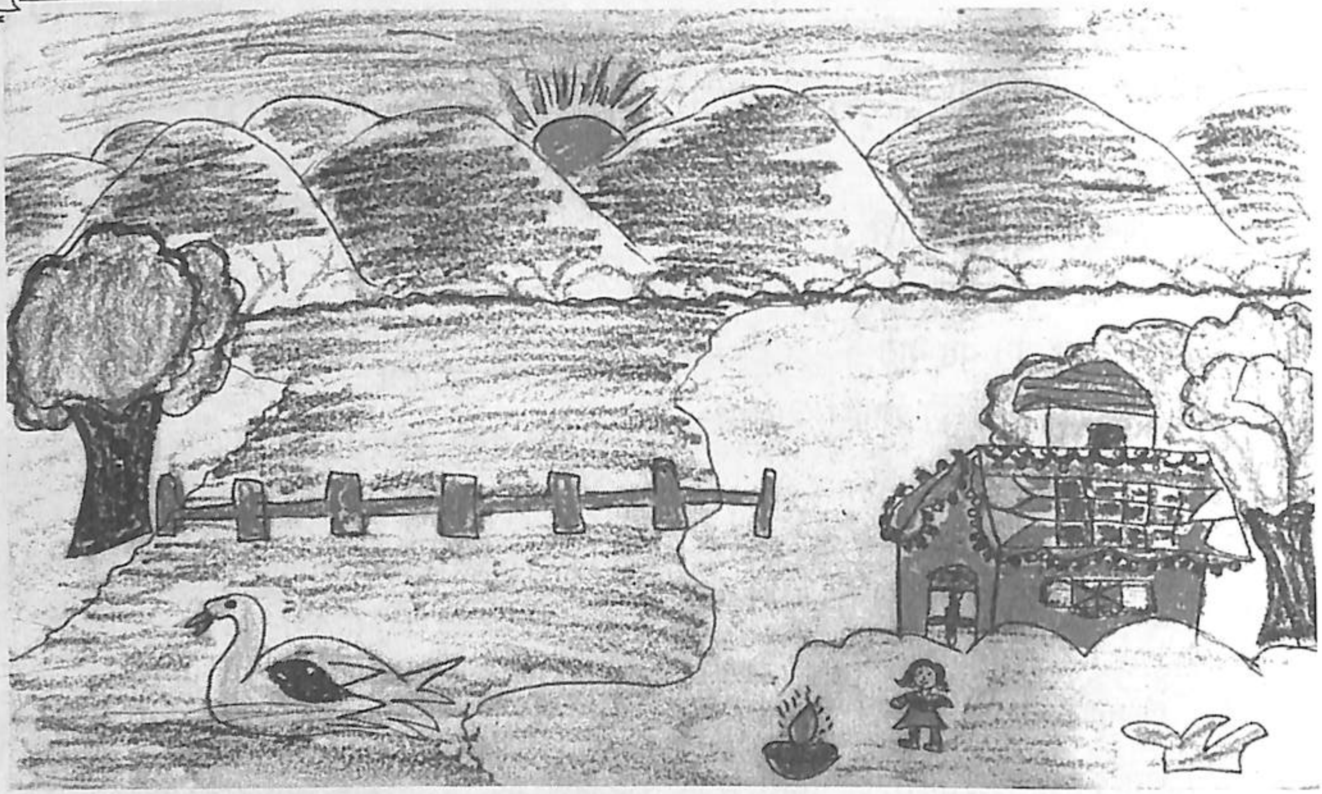
जब मेरा पहला दाँत टूटा

जब मेरा पहला दाँत टूटा
तब मैं इतना रोई,
रो-रो कर बना दिया,
मैंने अपना बुरा हाल।
फिर मैंने यह बात,
अपने पापा को बताई।
उन्होंने मुझसे कहा
ये तो था कमजोर दाँत
अब तुम्हारा आएगा ताकतवर दाँत।
फिर मैंने एक किताब पढ़ी,
जिसमें लिखा था,
रात को सोने से पहले,
रख दो अपना दाँत,
तकिया के नीचे,
और देखो, कमाल।
और मैंने भी वही किया
जब मैं सुबह उठी
तो मैंने तकिया के नीचे,
पाई एक सुंदर गुड़िया
ये था एक जादू
जो पाया मैंने उस जादुई किताब से।

शिवानी सिंह, चौथी, फ़ैज़ाबाद, उ.प्र.



विशाल कुमार गौर, पाँचवी, हिरणखेड़ा, म.प्र.

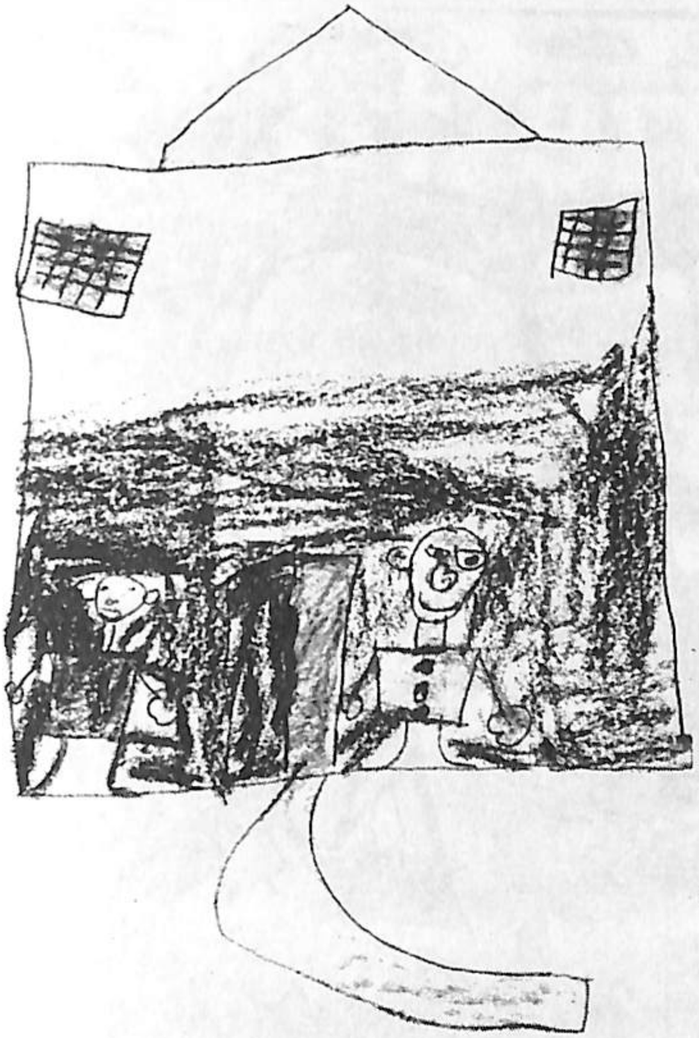


संध्या, छठी, भोपाल, म.प्र.

छोटी चींटी काम बड़ा

एक शहर था जहाँ सिर्फ चींटिया रहती थीं। एक दिन दो चींटी कहीं जा रही थीं। तो उन्हें रास्ते में एक गुड़ का छोटा-सा पीस मिला। तो दोनों में झगड़ा हो गया। कि यह मैं खाऊँगी, यह मैं खाऊँगी इतनी-सी बात पर दोनों ने झगड़ा कर लिया। तो झगड़ते-झगड़ते दोनों सूर्यमुखी पौधे के पास जा पहुँचीं। उधर बहुत सारी चींटी थीं। तो वो दोनों कैसे भी बचते-बचते आये। फिर वहाँ एक बच्चा बॉल से खेल रहा था। तो दोनों को ऐसा लगा कि बॉल गोल घूम कर इधर आएँगी। तो वो दोनों गुड़ को छोड़ के अलग हो गए। फिर से वो दोनों झगड़ गए। वो बच्चा अपनी बॉल उठाने के लिए उधर आया। तो उसे लगा कि यह मुझे मार डा़लेगा। इसलिए वो दोनों चींटी भाग गई। फिर वह बालक जमीन पर लेटकर वो दोनों चींटियों को बड़े ध्यान से देख रहा था। तो उसने सोचा कि अगर मैं भी इनके जैसा होता। तो वो बालक धीरे से लकड़ी का छोटा- पीस लिया। तो वो चींटियाँ ऊंचाई से नीचे उतर रही थीं कि वह बालक ने नीचे वाली चींटी को गिरा दिया और उसका गुड़ भी गिरा दिया और बाद में दोनों चींटियों को गिरा दिया। फिर उन चींटियों ने सोचा की अपन दोनों को गिरा दिया। तो फिर उन दो चींटियों ने सोचा की अब से अपन दोनों झग़ड़ा नहीं करेंगे। आज से अपन दोनों को जो भी कुछ मिलेगा अपने दोनों आधा-आधा मिल बाँटकर खायँगे। फिर वो दोनों हमेशा मिल बांटकर खाने लगे।

मोना भदौरिया, चौथी, 34 सी, आदर्श नगर



वरदान, पहली, भोपाल, म.प्र.

बिल्ली रानी

बिल्ली रानी, बड़ी सयानी
चली मार्केट, आ गया पानी
दौड़ी तब वह घर के पीछे
पैर फिसल गया, गिर गई नीचे।
किसी तरह वह घर को आई
अपनी हालत पर शरमाई

साड़ी बदल, उठाकर छाता
जोड़ लिया घमण्ड से नाता।
फिर निकली, घर से वह ऐसे,
बिजली चमकी, बादल में जैसे।
तभी जोर का आया पानी
भागी घर को बिल्ली रानी।

प्रस्तुति - सपन कोठारी, छठीं, तनोड़िया, शाजापुर, म.प्र.



आर्यन मिश्रा, महू, म.प्र.

सिन्नी

मेरा घर फलटण में बारामती रोड के पास खेत में है। वहाँ मैंने मोर सिन्नी पाला था। पेड़ के नीचे एक पिंजड़े में वह रहता था। कभी-कभी बाहर घूमता। हमारे हीरोहोण्डा शोरूम की 29-30 मोटर सायकिलें घर के समाने खड़ी थी। एक दिन वह मोर घूमता-घूमता मोटर साइकिल पर चढ़ गया। मैं उसे पिंजड़े में रखने वाली थी कि वह भागने लगा। मैं चिल्लाई। आगे ना जा सिन्नी लेकिन वह न माना और रस्ते पर गया। उसके ऊपर से गाड़ी गयी। फिर हमने उसे खेत में गाड़ा, दूसरे दिन मैं स्कूल से आई तो एक पंख पिंजड़े में था। मैंने वह पंख लिया और मेरी किताब में रखा। मुझे उसकी बहुत याद आती है।

केतकी बोरावके, फलटण, महाराष्ट्र

चूहे की शादी

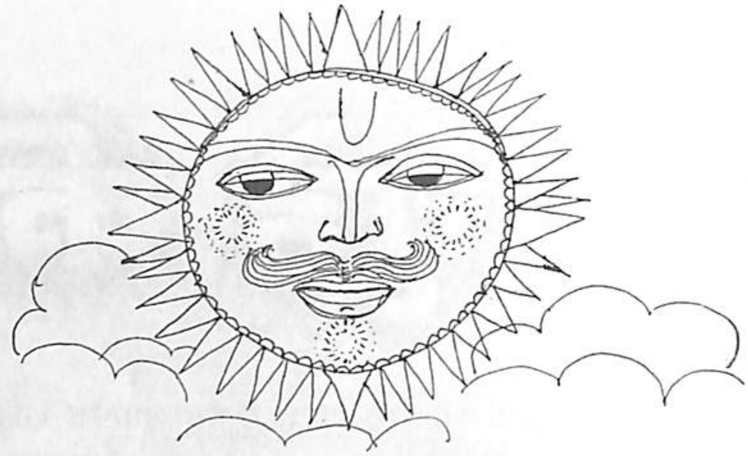
एक चूहा था। वह शादी करना चाहता था। लेकिन किसी भी लड़की से नहीं।
'मैं संसार में जो सबसे बलशाली है उसी की बेटी से शादी करूँगा।
और न कर पाया
तो मुझे शादी करना ही नहीं।' सोचा चूहे ने।

तो चूहा चला ढूँढने उसे
जो संसार में सबसे बलशाली हो।

चूहा गया सूरज के पास,
'आखिर,' चूहे ने सोचा,
'सूरज से ज़्यादा बलशाली कौन हो सकता है।'



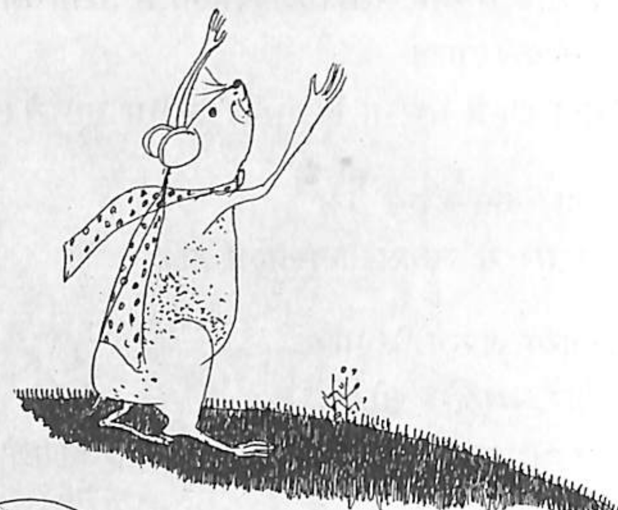
चूहा बोला- "महाराज!
आप हैं संसार में सबसे बलशाली।
इसलिए मैं
आपकी बेटी से करना चाहता हूँ शादी।
और जो न हो पायी यह शादी
तो मुझे शादी करना ही नहीं।"



"लेकिन मैं तो संसार में सबसे बलशाली नहीं हूँ।" सूरज बोला।

"मुझसे ज़्यादा बलशाली तो बादल है।"

"बादल?" चूहे ने कहा।



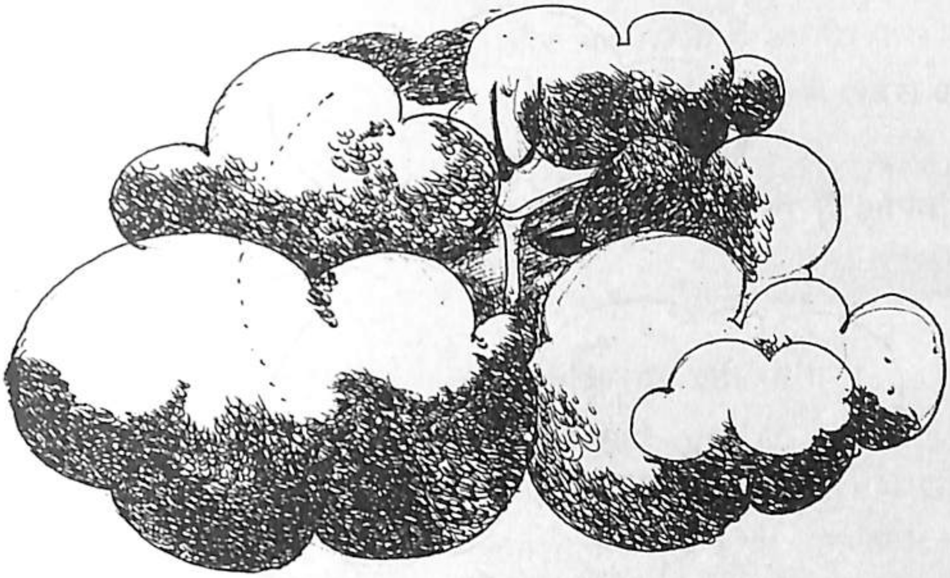


"हाँ," सूरज बोला।

"बादल जब आ जाता है मेरे आगे
नहीं भेज पाता मैं धरती को धूप।
धरी रह जाती है मेरी ताकत
यहीं की यहीं"

"ठीक है, तो मैं चला बादल के पास," चूहा बोला। "तुम सम्भालो अपनी बेटी!"

और चूहा चला बादल को खोजने।





बादल के पास जाकर बोला चूहा, "महाराज!
आप हैं संसार में सबसे बलशाली।
इसलिए मैं करना चाहता हूँ आपकी बेटी से शादी।
और जो नहीं हो पायी यह शादी
तो मुझे शादी करना ही नहीं।"

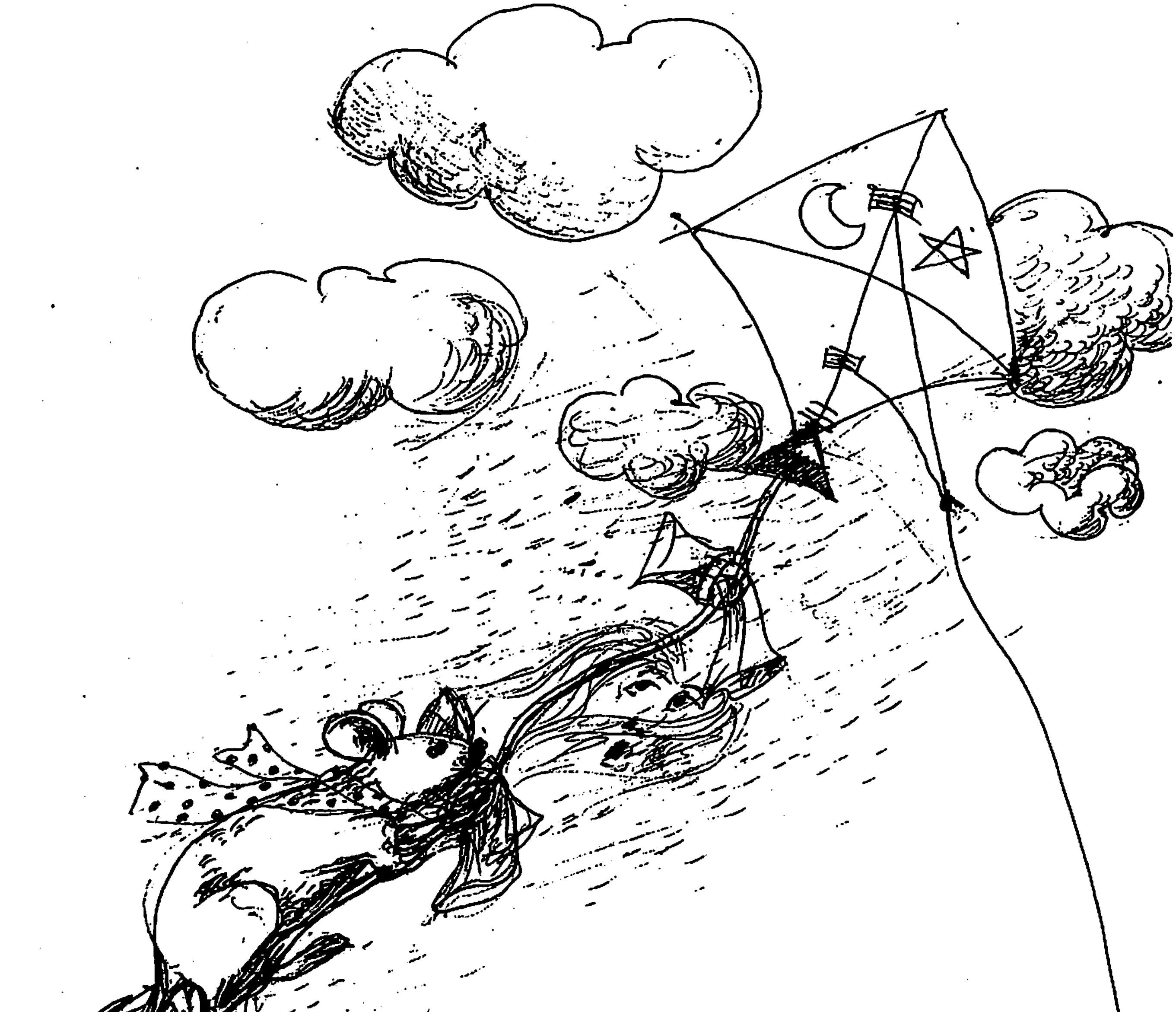
"लेकिन मैं तो संसार में सबसे बलशाली नहीं भाई!" बादल बोला।

"मुझसे ज़्यादा बलशाली तो है हवा!"

"हवा?" चूहा बोला।

"हाँ," बादल ने कहा। "उसका एक झोंका मुझे कहीं का कहीं फेंक सकता है।"

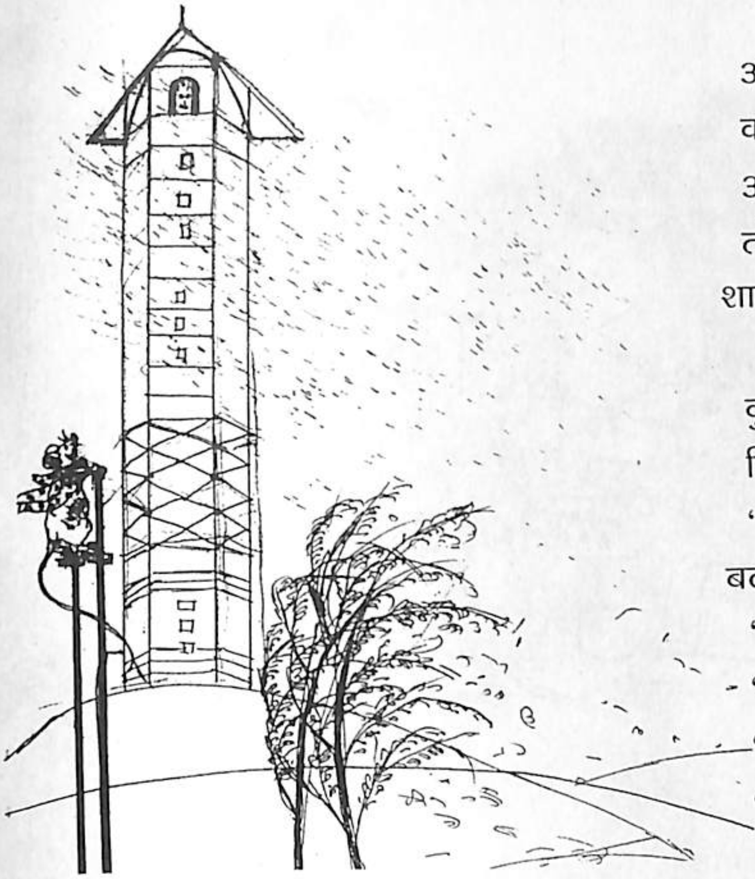
"ठीक है, तो मैं चला हवा के पास," चूहा बोला। तुम सम्भालो अपनी बेटी!





हवा के पास जब पहुँचा चूहा
बोला- "आप हैं संसार में सबसे बलशाली
इसलिए मैं करना चाहता हूँ आपकी बेटी से शादी।
और जो न हो पायी यह शादी
तो फिर मुझे शादी करना ही नहीं।"
"लेकिन मैं नहीं हूँ सबसे बलशाली," हवा बोली
"मुझसे बलशाली तो है वो मीनार!"
"मीनार?" चूहा बोला।





और अब आया हूँ आपके पास।
क्या आप ही हैं संसार में सबसे बलशाली?
अगर हैं
तो मैं करना चाहता हूँ आपकी बेटी से शादी।"

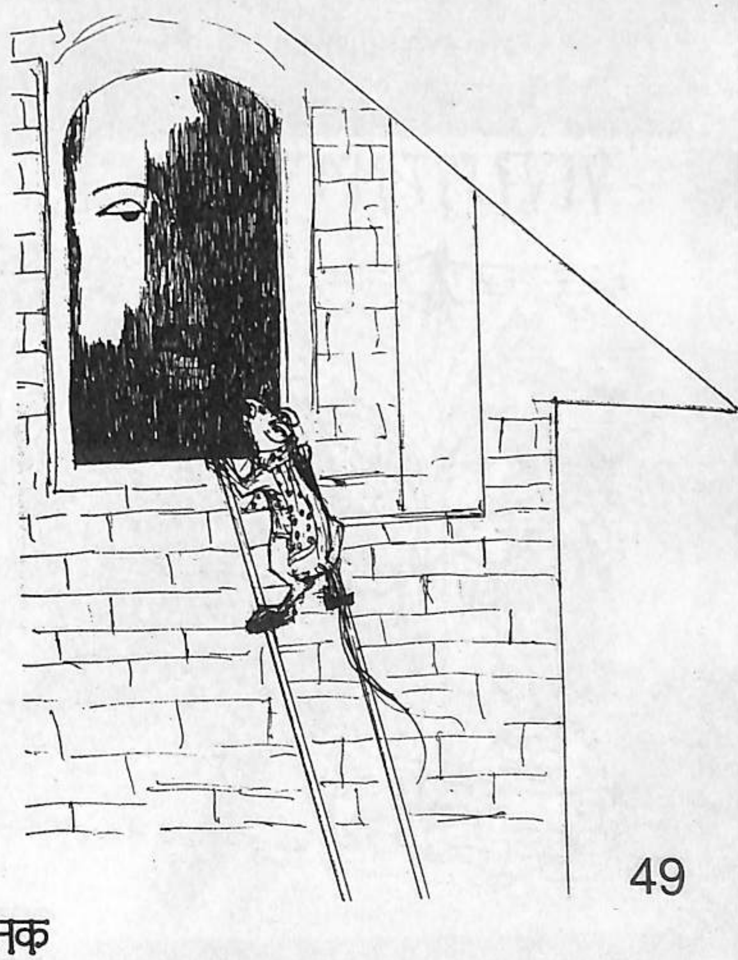
कुछ देर चुप रही मीनार।
फिर बोली-
"मैं नहीं हूँ लेकिन संसार में सबसे बलशाली। मुझसे भी बलशाली है एक।"
"कौन-कौन?" चूहे ने पूछा।
"वो छोटा-सा चूहा!" मीनार ने कहा।
"छोटा-सा चूहा?"
"हाँ।"

"और क्या?" हवा ने कहा।
"कुछ नहीं बिगाड़ पाती मैं उसका।
लाख सिर पटक लूँ चाहे।"

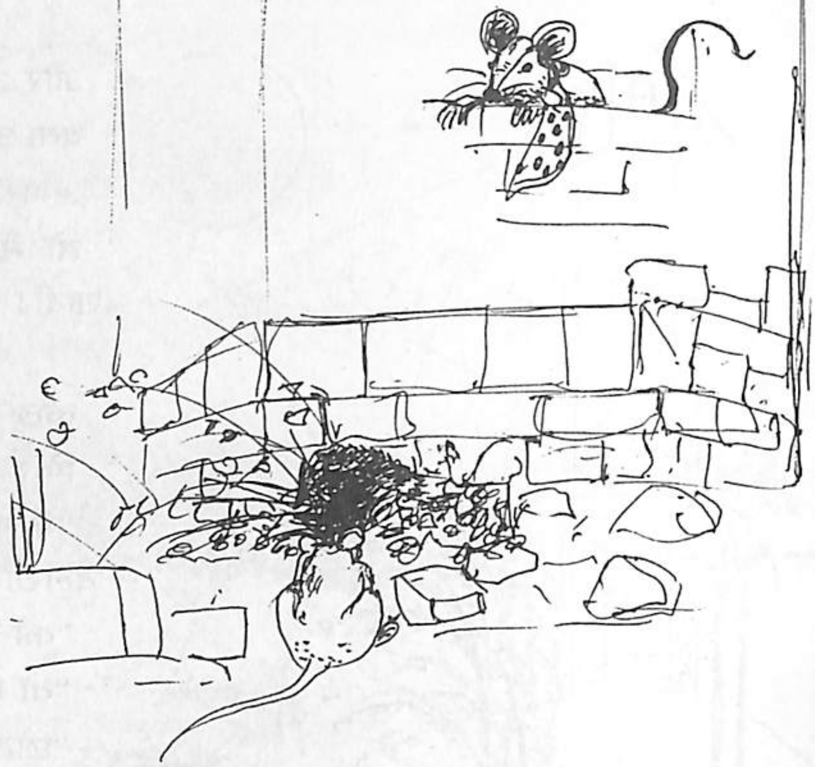
"ठीक है
तो मैं चला मीनार के पास
तुम सम्भालो अपनी बेटी!" चूहा बोला।

और चूहा चला ढूँढने मीनार।

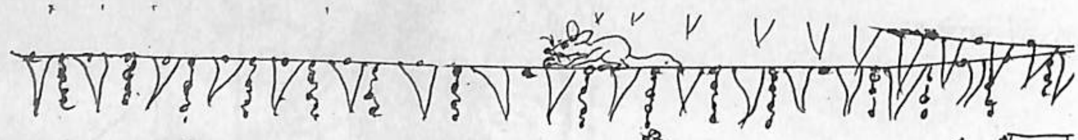
मिली जब मीनार
चूहा बोला- "सब जगह गया ढूँढने
संसार का सबसे बलशाली।
सूरज के पास।
बादल के पास।
हवा के पास।



“देखो उसे मेरे पैरों के पास।
कैसे कुतर रहा है मिट्टी।
और बना रहा है सूराख!
एक दिन यह सूराख बढ़ते-बढ़ते
इतना बड़ा हो जाएगा।
कि भरभराकर गिर पड़ूँगी मैं।
सचमुच मुझसे ज़्यादा बली है वो
नन्हा चूहा।
संसार में सबसे ज़्यादा बलशाली।”



‘संसार में सबसे बलशाली!’
चूहे ने सोचा।
‘तो चला मैं उसी के पास
माँगने अपने लिए उसकी बेटी का हाथ।
और हो गई
तो क्या शानदार होगी यह शादी!’



और सचमुच
शानदार हुई
वह शादी

चित्र- शोभा घारे

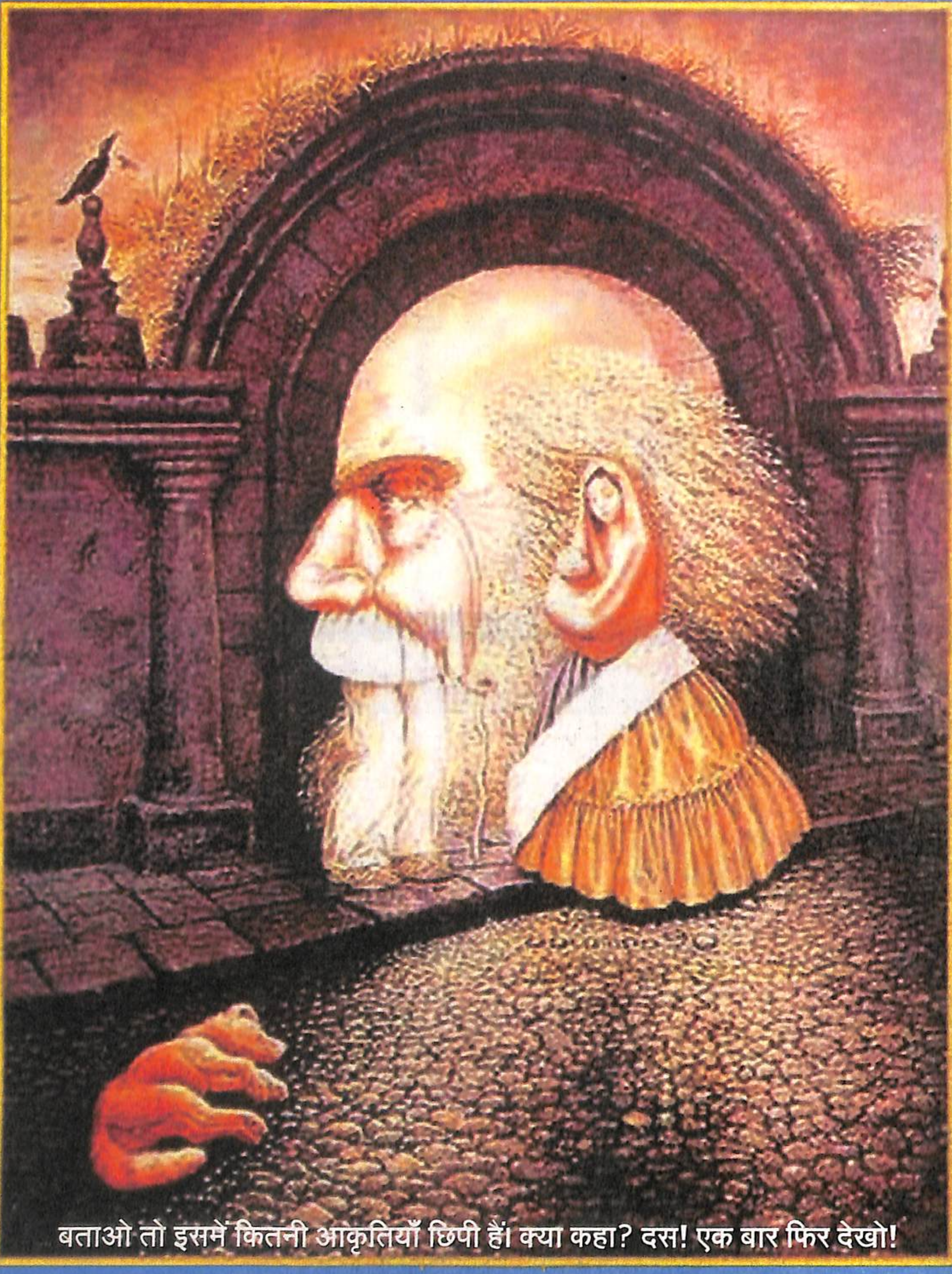


(नाम, पता नहीं लिखा)



कसमा, भोपाल, म.प्र.

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



बताओ तो इसमें कितनी आकृतियाँ छिपी हैं। क्या कहा? दस! एक बार फिर देखो!

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना